फरवरी 2006

10 रुपए

प्यारे दोस्तों,

V तुमने बहुत बार देखा होगा कि बहुत से लोगों के लिये 'पढ़ना', 'ज्ञान हासिल करना' और 'याद करना' लगभग एक जैसी चीजें हैं। शिक्षक, मां-बाप या धार्मिक नेता, कई लोग मानते हैं कि अगर चीजों को 'कंठस्थ' कर लिया तो हम 'ज्ञानी' हो गए। स्कूल की पढ़ाई में भी बहुत सारे नाम, तारीखें, फार्मूले और परिभाषाएं सिर्फ याददाश्त में उतारने पर ही जोर है। इन्हें किसी तरह निगल कर इम्तिहान में उगलने से बढ़िया नंबर भी अक्सर मिल जाते हैं। क्विज़ प्रतियोगिताओं में भी इस याददाश्त का ही परीक्षण होता है। बहुत वाहवाही होती है, अगर किसी को यह याद हो कि फलाने महान व्यक्ति ने कहां या कब जन्म लिया या कोई आविष्कार कब किसने किया। अब देखें कि इस तरह का 'ज्ञान' जीवन की कसौटी पर कितना खरा उतरेगा ?

पहली बात तो यह है कि विचारों व सिद्धान्तों में ही किसी व्यक्ति या आविष्कार या घटना की महानता है। अगर विचारों को जाना, समझा और गुना न जाए तो तारीखें या नाम रटकर क्या हो जाएगा? और फिर आज जब जानकारी के विशाल भंडार करोड़ों किताबों में ही नहीं, इंटरनेट पर एक बटन दबाने से उपलब्ध हैं - केवल जानकारी को समृति में उतारने की क्या उपयोगिता हो सकती है? लेकिन फिर भी प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में याद करने वालों की बहुत प्रशंसा होती है। क्यों? शायद यह मानसिकता 2-3 हजार वर्ष पुरानी सोच का परिणाम है - जिस समय न छपी किताबें थीं, न इंटरनेट जैसे साधन। ऐसे में ज्ञान को सिर्फ याद करके दिमाग में रखा जा सकता था। वहीं से शास्त्रों, श्लोकों, मंत्रों आदि को याद करने की परंपरा उपजी। उस जमाने के लिये यह भले ही बेहद उपयोगी रहा हो, आज इसकी ज़रूरत दिन पर दिन कम होती जा रही है।

एक ओर दुनिया के ज्ञान का भंडार इतना ज्यादा बढ़ चुका है कि उसके एक छोटे से अंश को भी एक आदमी के लिये हासिल कर पाना संभव नहीं रह गया है। दूसरे जब जानकारी इतनी आसानी से उपलब्ध होती जा रही है, समझने, गुनने और नई रचना करने का ही अब मूल्य है। तीसरे, सारी की सारी ताकत शब्दों के अर्थों में है, शब्दों में नहीं। दुनिया में हजारों भाषाएं हैं। किसी भी भाषा के कोई भी मूल्यवान शब्द अगर बिना समझे रट लिये जायें - चाहे उनकी कितनी भी दोहराई की जाए, उनसे कुछ नहीं निकलेगा, जब तक उनके अर्थों को समझा व परखा न जाए। कितनी बार हम पढ़ाई में, या पूजा-पाठ में, शब्दों की विवेकहीन दोहराई करते हैं - सैंकड़ों, हजारों बार, इस धोखे में कि ये शब्द ही शायद हमारा उद्धार कर देंगे। यह तोतारटंत इन्सानी बुद्धि का अपमान है।

मनुष्य का जो भी उद्धार हुआ है वह ज्यादा से ज्यादा समझ कर, अपने विचारों को सुधार कर, संवार कर ही हुआ है, याद कर के नहीं ।

बहुत प्यार सहित,
अंशुमाला

बच्चों का इन्द्रधनुष

मासिक, वर्ष 1, अंक **9, फरवरी 2006**

पत्र व रचना भेजने का पता :
इन्द्रधनुष, हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,
तीर्थ निवास, इंजन घर, संजौली, शिमला-6
फोनः 0177-2842972, 2640873
फैक्सः 0177-2645072
मोबाइलः 9418000730

पत्रिका लगवाने के लिये इनको लिखें :
भीम सिंह, हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,
सौली खड्ड, मंडी, हि० प्र० - 175001
फोनः 01905-237478, 9418073190
फैक्सः 01905-237878

एक प्रति का मूल्यः 10 *रुपए*
व्यक्तिगत वार्षिक शुल्कः 120 *रुपए*
संस्थागत वार्षिक शुल्कः 120 *रुपए*
बाहरी देशों में वार्षिक शुल्कः $ 15

इस अंक में...

हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा तैयार

अंशुमाला गुप्ता द्वारा अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क के लिये प्रकाशित तथा सवितार प्रेस, चंडीगढ़ द्वारा मुद्रित

क्वेंटीन रोनाल्ड
रूपान्तरण :अरविंद गुप्ता

कनाडा में मौंट्रियल नाम का बड़ा शहर है। वहां कई छोटी-छोटी सड़कें भी हैं। उनमें से एक है एडवर्ड स्ट्रीट। उस सड़क को पियरे जितनी अच्छी तरह और कोई भी नहीं जानता था। उसका एक कारण था। पिछले तीस सालों से पियरे उस सड़क पर बसे सभी परिवारों को दूध बांटता था।

पिछले पंद्रह सालों से पियरे की दूधगाड़ी को एक बड़ा सफेद घोड़ा खींचता था। घोड़े का नाम जोज़फ था। शुरू में जब वह घोड़ा दूध-कम्पनी के पास आया तब उसका कोई नाम नहीं था। कम्पनी ने पियरे को सफेद घोड़े के इस्तेमाल की इजाज़त दे दी। पियरे ने प्यार से घोड़े की गर्दन को सहलाया और उसकी आंखों में झांक कर देखा।

''यह एक समझदार, भला और वफ़ादार घोड़ा है,'' पियरे ने कहा। ''मैं इसका नाम संत जोज़फ के नाम पर रखूंगा, क्योंकि वह एक नेक और दयालु इंसान थे।''

साल भर के अन्दर ही घोड़े ने सड़क का पूरा रास्ता रट लिया। पियरे अक्सर शेखी बघारता, ''मैं तो लगाम छूता तक नहीं हूं। मेरे घोड़े को तो लगाम की जरूरत ही नहीं है।''
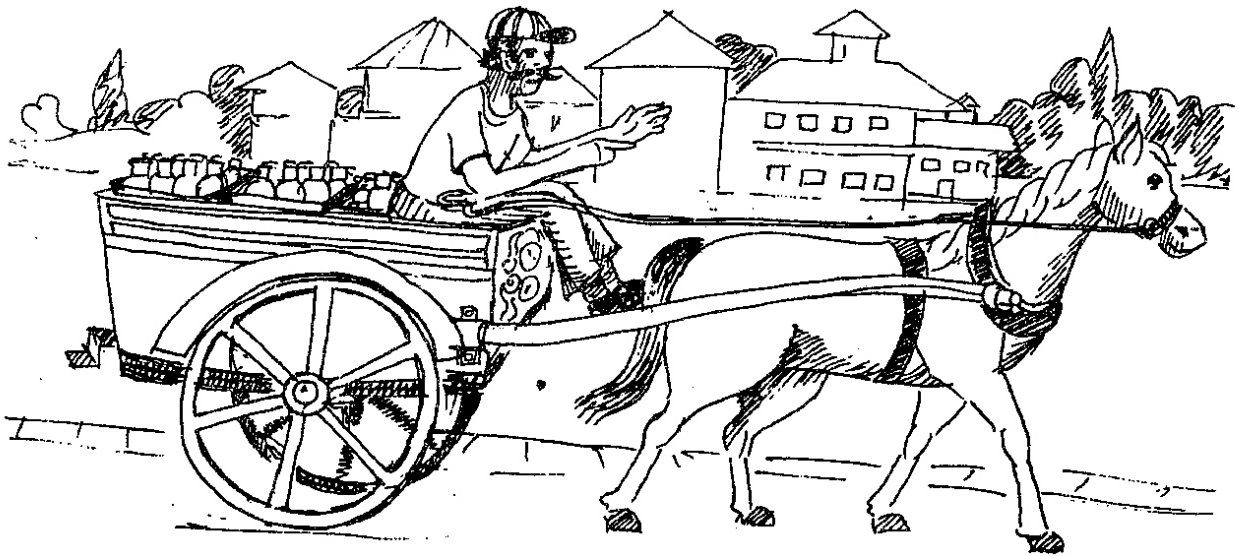
तड़के सुबह पांच बजे ही पियरे दूध की कम्पनी में रोजाना पहुंच जाता। तब गाड़ी में दूध लादा जाता और फिर जोज़फ उसे खींचता। पियरे अपनी सीट पर बैठते ही जोज़फ को पुचकारता और घोड़ा अपना मुंह उसकी ओर घुमा देता। आस-पास खड़े अन्य ड्राइवर कहते, ''सब कुछ ठीक ठाक है पियरे, जाओ।'' इसके बाद पियरे और जोज़फ इत्मीनान के साथ सड़क पर निकल पड़ते।

पियरे के इशारे के बिना ही गाड़ी अपने आप एडवर्ड स्ट्रीट पहुंच जाती। फिर घोड़ा पहले घर पर रुकता और पियरे को नीचे उतर कर दरवाजे के सामने एक बोतल दूध रखने के लिए करीब तीस सेकेंड की मोहलत देता। घोड़ा फिर दूसरे घर पर रुकता।

इस तरह पियरे और घोड़ा पूरी एडवर्ड स्ट्रीट की लम्बाई पार करते। फिर गाड़ी को घुमाकर दोनों वापस आते। सचमुच जोज़फ बहुत होशियार घोड़ा था।

अस्तबल में पियरे जोज़फ की तारीफ करते न थकता। ''मैं कभी उसकी लगाम छूता तक नहीं हूं। कहां-कहां रुकना है यह उसे अच्छी तरह मालूम है। अगर जोज़फ घोड़ागाड़ी खींच रहा है, तो मेरी जगह अगर कोई अंधा आदमी भी हो, तो काम चल जायेगा।

बरसों तक यही सिलसिला चलता रहा। पियरे और जोज़फ धीरे धीरे बूढ़े होने लगे। पियरे की मूंछे अब पक कर सफेद हो गयीं थी। जोज़फ भी अब अपने घुटनों को उतना ऊंचा नहीं उठा पाता था। अस्तबल के सुपरवाइज़र जैक को उनके बुढ़ापे का पता तब चला जब एक दिन पियरे लाठी के सहारे चलता हुआ आया।

''क्या बात है पियरे,'' जैक ने हंस कर पूछा। ''क्या तुम्हारी टांगों में दर्द है?'' ''हां जैक,'' पियरे ने जवाब दिया। ''मैं अब बूढ़ा हो रहा हूं और पैर भी दर्द करने लग गए हैं।''

''बस! तुम अपने घोड़े को दरवाजे पर दूध की बोतलें रखना सिखा दो,'' जैक ने कहा। ''बाकी सारा काम तो वह करता ही है।''

एडवर्ड स्ट्रीट पर बसे सभी चालीस परिवारों को पियरे अच्छी तरह जानता था। घर के नौकरों को मालूम था कि पियरे लिख पढ़ नहीं सकता, इसलिए वह उसके लिए कोई चिट्ठी नहीं छोड़ते थे। अगर कभी दूध की और बोतलों की जरूरत होती, तो वे घोड़ागाड़ी की आवाज सुन कर दूर से ही चिल्लाते, ''पियरे, आज एक और बोतल देना।''

पियरे की याददाश्त बहुत अच्छी थी। वापस अस्तबल पहुंच कर बिना गलती किये वह जैक को दूध का सारा हिसाब बता देता। जैक अपनी डायरी में तुरन्त हिसाब नोट कर लेता था।

एक दिन दूध कम्पनी का मैनेजर सुबह-सुबह अस्तबल का मुआयना करने पहुंचा। जैक ने पियरे की ओर इशारा करते हुए मैनेजर से कहा, ''जरा देखिए तो! पियरे किस तरह अपने घोड़े से बात करता है। और घोड़ा भी कितने

प्यार से अपना मुंह घुमा कर पियरे की बात सुनता है। जरा घोड़े की आंख की चमक तो देखिए! मुझे लगता है कि इन दोनों में बड़ी गहरी दोस्ती है। इस रहस्य को बस यही दोनों जानते हैं।

कभी कभी तो ऐसा लगता है जैसे दोनों हम पर हंस रहे हों। पियरे भला आदमी है, पर बेचारा अब बूढ़ा हो रहा है। क्या मैं आपसे अर्ज करूं कि अब आप उसे रिटायर कर दें और उसकी पेंशन बांध दें?'' उसने उत्सुकता से पूछा।

''बात तो तुम्हारी ठीक है,'' मैनेजर ने कहा। ''पियरे अपना काम तीस साल से कर रहा है और कभी कहीं से कोई शिकायत नहीं आई है। उससे कहो कि अब वह घर पर बैठ कर आराम करे। उसे हर महीने पूरी तनख्वाह मिलती रहा करेगी।''

परन्तु पियरे ने रिटायर होने से इंकार कर दिया। उसे इस बात से गहरा धक्का लगा कि वह अपने प्यारे घोड़े जोज़फ से रोज नहीं मिल पायेगा। ''हम दोनों ही अब बूढ़े हो रहे हैं,'' उसने जैक से कहा। ''हम दोनों अगर इकट्ठे ही रिटायर हों तो अच्छा होगा। मैं आपसे यह वादा करता हूं कि जब मेरा घोड़ा रिटायर होगा जब मैं भी काम छोड़ दूंगा।''

जैक एक भला आदमी था। वह पियरे की बात समझ गया। पियरे और जोज़फ के बीच रिश्ता ही कुछ ऐसा था जिसे देख दुनिया मुस्कुराने लगे। ऐसा लगता था मानों दोनों एक दूसरे का सहारा हों। जब पियरे गाड़ी की सीट पर बैठा हो और जोज़फ गाड़ी खींच रहा हो, तब दोनों में से कोई भी बूढ़ा नहीं लगता था। लेकिन काम खत्म होने के बाद पियरे लंगड़ाते हुए सड़क पर इस तरह धीरे-धीरे चलता, जैसे वह बहुत बूढ़ा आदमी हो। उधर घोड़े का भी मुंह लटक जाता। वह हारा-थका सा अस्तबल वापस जाता।

सुबह सुबह एक दिन जब पियरे आया तो जैक ने उसे एक बेहद बुरी खबर सुनाई। ''पियरे, आज सुबह जोज़फ सोकर ही नहीं उठा। वह बहुत बूढ़ा हो गया था। 25 साल की उम्र में घोड़े की वैसी ही हालत हो जाती है जैसी 75 साल के बूढ़े आदमी की होती है।''

''हां,'' पियरे ने धीरे से कहा। ''मेरी उम्र अब पिछत्तर साल की है। मैं अब जोज़फ को कभी नहीं देख पाऊंगा।''

''नहीं, तुम उसे देख सकते हो,'' जैक ने दिलासा देते हुए कहा ''वह अभी अस्तबल में है और उसके चेहरे पर बड़ी शांति है। तुम जाकर उसे देख तो लो।''

पियरे घर लौटने के लिए वापस मुड़ा,

''तुम समझोगे नहीं, जैक।'' जैक ने उसका कंधा थपथपाया, ''फिक्र न करो। हम तुम्हारे लिए जोज़फ जैसा ही एक और घोड़ा ढूंढ़ देंगे। और महीने भर में तुम जोज़फ की तरह उसे भी पूरा रास्ता सिखा देना..........है न ....।''

पियरे बरसों से एक मोटी टोपी पहनता था। टोपी के हुड से उसकी आंखें लगभग ढंक जाती थीं। जब जैक ने पियरे की आंखों में झांका तो वह सहम गया। उसे उन आंखों में एक निर्जीव भाव दिखाई दिया। पियरे की आंखों से उसके दिल का दर्द झलक रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसका दिल रो रहा हो।

''आज छुट्टी ले लो पियरे,'' जैक ने कहा। परन्तु पियरे उससे पहले ही घर वापस चल पड़ा था। अगर कोई उसके पास होता तो वह अवश्य पियरे की आंखों से लुढ़कते आंसू देखता और उसका सुबकना सुनता। पियरे एक कोना पार कर सीधा सड़क पर आ गया। उधर तेजी से आते ट्रक के ड्राइवर ने जोर से हार्न बजाया और दबा कर ब्रेक लगाया, लेकिन पियरे को कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

पांच मिनट बाद एम्बुलेंस आई। उसके ड्राइवर ने कहा, ''यह आदमी मर चुका है।''

तब तक जैक और दूध-कम्पनी के कई लोग वहां आ पहुंचे और पियरे के मृत शरीर को देखने लगे।

ट्रक ड्राइवर ने गुस्से में कहा, ''यह आदमी खुद-ब-खुद ट्रक के सामने आ गया। शायद उसे ट्रक दिखा ही नहीं। वह ट्रक के सामने इस तरह आया जैसे उसे कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा हो-जैसे वह एकदम अंधा हो।''

एम्बुलेंस का डाक्टर अब लाश की ओर झुका, ''अंधा! वह आदमी तो सचमुच अंधा था। जरा उसकी आंखों का मोतियाबिंद तो देखो? यह कम से कम पांच साल से अंधा होगा।'' फिर उसने जैक की तरफ मुड़कर कहा, ''तुम कहते हो कि यह आदमी तुम्हारे लिए काम करता था? तुम्हें नहीं मालूम कि वह अंधा था?''

''नहीं............नहीं,'' जैक ने हल्के से कहा। ''यह रहस्य हम में से किसी को नहीं पता था। सिर्फ उसके दोस्त जोज़फ को पता था.......। यह उन दोनों के बीच की आपसी बात थी। सिर्फ........उन दोनों के बीच की।''
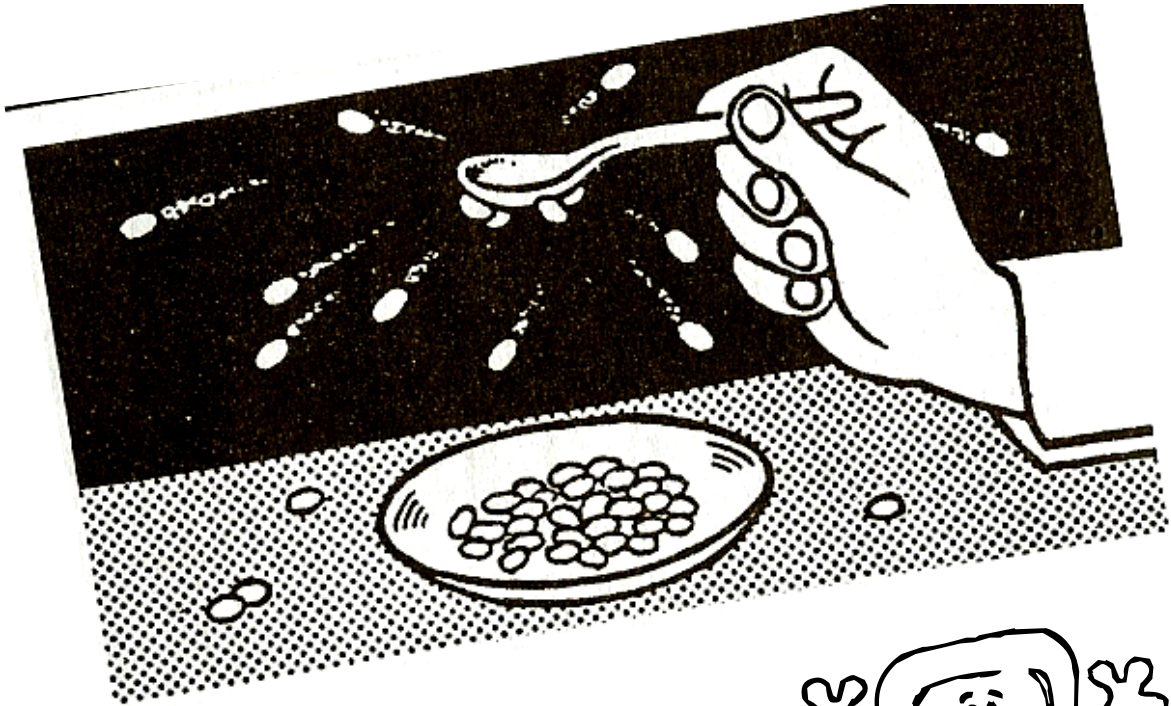
उछलते दाने
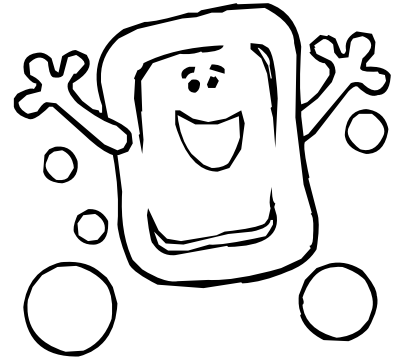
एक प्लास्टिक की चम्मच को एक ऊनी कपड़े पर रगड़ कर विद्युत आवेशित करके एक मुरमुरे (फूले चावल या लैया या मूड़ी) की प्लेट के ऊपर रखें। ये मुरमुरे के टुकड़े उछल कर चम्मच से चिपक जाएंगे और थोड़ी देर तक चिपके रहेंगे, फिर अचानक सभी दिशाओं में बिखर जाएंगे।

यह मुरमुरे के दाने ऋण आवेशित **(negatively charged)** चम्मच की तरफ खिंच जाते हैं और उस पर कुछ समय तक चिपके रहते हैं। कुछ इलेक्ट्रॉन चम्मच से मुरमुरे में चले जाते हैं, जब तक उन दानों और चम्मच का आवेश एक न हो जाए। क्योंकि सामान आवेश एक दूसरे का विरोध करते हैं, इसलिए ये दाने इसके बाद चम्मच से दूर जा गिरते हैं।

✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲

धनुष जैसी धार
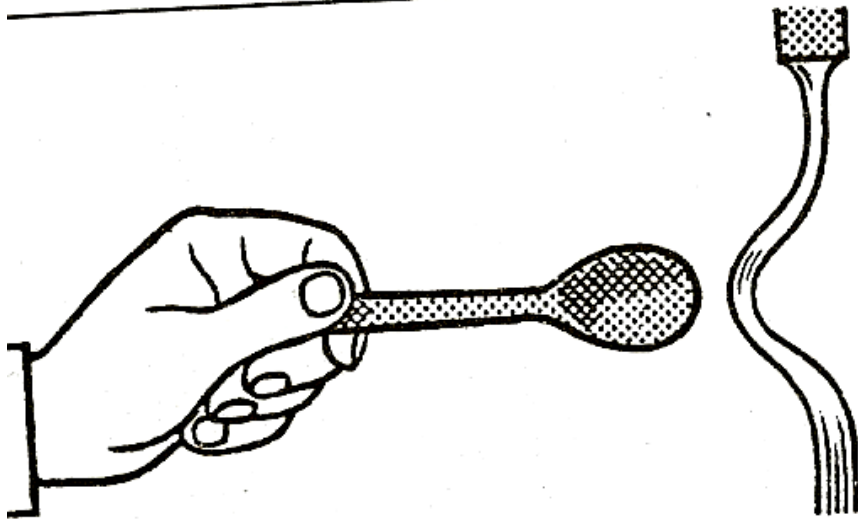
एक प्लास्टिक की चम्मच को एक ऊनी कपडे से रगड़ें। पानी के नलके को धीरे से खोलें और चम्मच को पानी की पतली धार के पास लाएं। पानी उस चम्मच की तरफ एक धनुष की भांति खिंच जाएगा।

चम्मच का विद्युत आवेश पानी के अनावेशित कणों को अपनी ओर खींचेगा। अगर पानी चम्मच को छूता है तो यह प्रक्रिया खत्म हो जाएगी। यह इसलिये होता है क्योंकि पानी बिजली का अच्छा चालक है। अगर चम्मच उससे छू जाए तो वह सारे विद्युत आवेश को बहा ले जाता है। हवा नें पानी के छोटे छोटे कण भी अपने में बिजली ले सकते हैं। इसीलिये अचल विद्युत **(static electricity)** वाले सभी प्रयोग सूखे दिनों में या काफी गर्म किये कमरों में ही हो सकते हैं।

y नाराज़ गुब्बारे
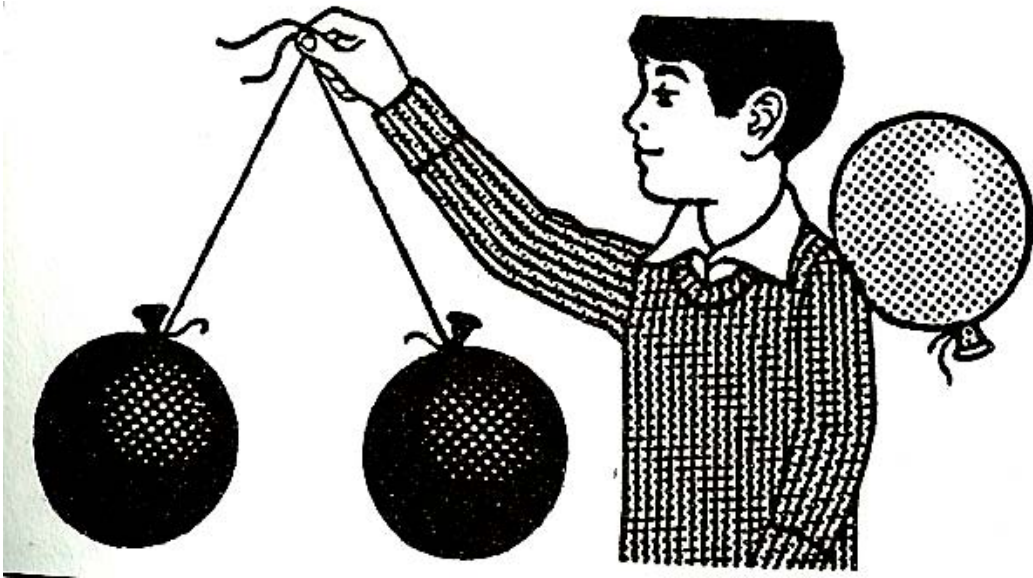
दो गुब्बारों को फुलाओ और दोनों को एक धागे से बांध दो। दोनों को ऊनी कपड़े से रगड़ो और धागे से नीचे लटकने दो! पहले दो प्रयोगों की तरह वह आकर्षित नही होंगे और एक दूसरे से दूर हो के तैरने लगेंगे।

रगड़ने से दोनों पर _ण आवेश (negative charge) आ जाता है क्योंकि इलेक्ट्रॉन ऊनी स्वेटर से गुब्बारों में चले जाएंगे और स्वेटर पर धन आवेश (positive charge) हो जायेगा! _णात्मक और धनात्मक आवेश एक दूसरे को आकर्षित करते हैं इसलिए गुब्बारे स्वेटर से चिपके रहेंगे। जबकि दोनों ऋण आवेशित होने के कारण गुब्बारे एक दूसरे का विरोध करते हुए दूर रहेंगे।

अनुवाद : **AID** स्वयंसेवी

– ,p- t- iSl dh iLrd ^^fyfVy tk;V cd vkQ lkbl ,Dlifjes.Vl** ls lkHkkj

चाय की पत्ती, क्या-क्या रंग दिखाती!

वाह! चाय भी क्या चीज़ है। दुनिया भर में पी जाती है। बहुत से लोग तो इसके पीछे दीवाने हैं। चाय न पियें तो दिन अधूरा सा लगता है।

पर यह तो हुई आज की बात। लेकिन एक जमाने में चाय पीने का रिवाज़ ही नहीं था। चाय का इतिहास लम्बा भी है और मज़ेदार भी।

सदियों पहले चाय पीने का सिलसिला शुरू किया कुछ आदिवासी जातियों ने। पर शौक के लिए नहीं। वे तो इसे दवा के रूप में पीते थे। ये जातियां पहाड़ी जंगलों में रहती थीं। बाकी बर्मा और थाइलैंण्ड नाम के देशों में थीं।

धीरे-धीरे पहाड़ी जंगलों से चाय की खबर चीन देश पहुंची। कच्ची हरी पतियों का कड़वा पानी राजा के ससुर को भा गया। वह इसे शौक के लिए पीने लगे। दोस्तों को भी चाय पीने पर मजबूर करते। दोस्त परेशान ! बहाने ढूंढते चाय से बचने के। पर कुछ लोग इसके स्वाद को बढ़ाने की कोशिश में जुट गए। उबली पत्तियों को भूना गया। पर इससे बनी चाय को पीना अब भी मुश्किल था। फिर चाय में डाला गया नमक, प्याज, अदरक, चावल और संतरे के छिलके। तब कहीं जाकर चाय गले से उतरी।

दो सौ साल पहले चाय हमारे देश भी पहुंची। यहां अंग्रेजों ने पहली बार इसकी खेती शुरू की। अब तो चाय छोटी-बड़ी सभी दुकानों पर मिलने लगी। चाय कई और देशों में भी पहुंची। यह जहां गई, लोगों ने उसे अपने हिसाब से इस्तेमाल किया। बर्फीले देशों में शरीर में गर्मी पैदा करने की ज़रूरत होती है। इसलिए वहां चाय में डाला गया घी और मक्खन। कोरिया देश में चाय का साथ निभाते हैं- कच्चे अंडे। पहले चाय का घूंट लो, फिर कच्चे अंडे को चूसो। और फिर चाय का घूंट भरो। और अमरीका में पी जाती है एक खास तरह की ठण्डी चाय।

थाइलैण्ड में चाय से बनता है 'लैटपैट' नाम का पकवान। पत्तियों को पहले कई महीने ज़मीन में दबाकर रखा जाता है। फिर उसमें अदरक, नारियल, फल, मांस और तेल डाला जाता है। दूल्हा-दुल्हन इसे सुखी जीवन की कामना पूरी करने के लिए खाते हैं। चाय भी क्या चीज़ है- नाम एक, रूप अनेक।

-निरंतर की पुस्तक 'क्या आप जानते हैं', से साभार
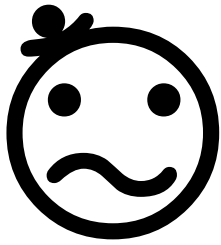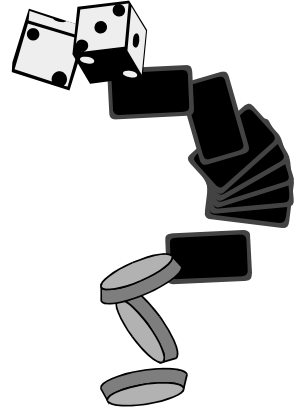
रास्ता खोजो

1) हमारे दिमाग की एक अदभुत क्षमता है - अपनी कल्पना में छवियां या आकृतियां बनाने की। हमारा दिमाग इन आकृतियों को घुमा सकता है, बदल सकता है, चला सकता है। तो आजमाओ कि तुम दिमागी छवियां कितनी बढ़िया बना सकते हो।

मान लो एक खाली छल्ला है जिसके अंदर एक चींटी बैठी है। (चित्र में बिन्दु) अगर इस छल्ले को एक चपटी सड़क पर लुढ़काएं, तो यह चींटी कैसे पथ पर घूमेगी? (बेचारी चींटी! अगर तुम्हारा सर न भी चकराए, उसका तो चकरा ही जाएगा!)

अब इस छल्ले को एक और बड़े छल्ले के अंदर रख कर लुढ़काते हैं। बड़ा छल्ला स्थिर रहता है, केवल छोटा लुढ़कता है। अब चींटी किस पथ पर घूमेगी?
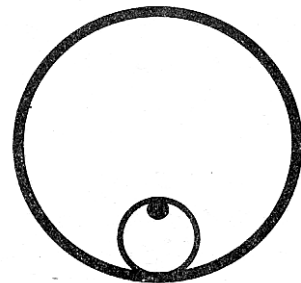
2) दी हुई तीन आकृतियों को ध्यान से देखो। क्या तुम बता सकती हो कि इस कड़ी की चौथी आकृति क्या होगी ?
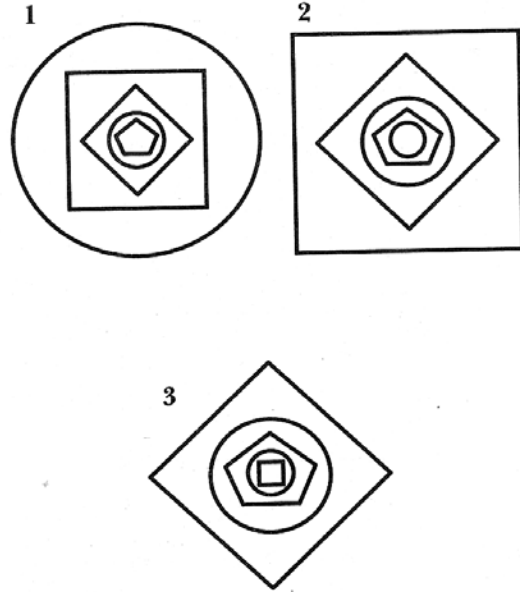
3) क्या तुमने पिचर पौधे के बारे में सुना है जो अपने मटकी जैसे फूलों में कीड़ों को फंसाकर, मार के खा जाता है? इसके फंसाने का एक खास तरीका यह है कि बारीक कांटे कीड़े को सिर्फ एक ही दिशा में आगे बढ़ने देते हैं। वह पीछे नहीं हट सकता।

नीचे दी पहेली में भी ऐसा ही है। इस आकार को एक बार में ही बनाना है, बिना पेंसिल उठाए। न तुम वापस पीछे जा सकते हो और न ही एक रास्ते पर दूसरी बार जा सकते हो।
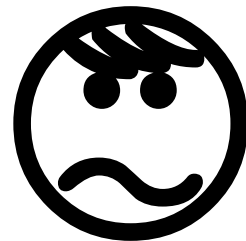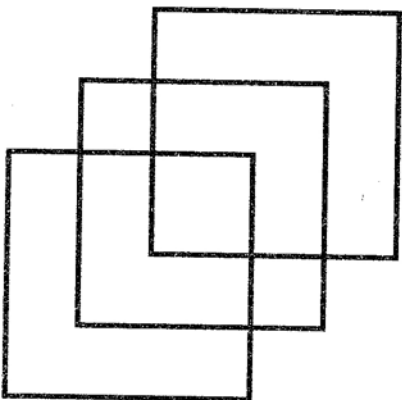
हर बार लेखिका और वैज्ञानिक टी. वी. पद्मा तुम्हारे लिए कुछ न कुछ लिखती हैं। इस बार वे टिंकू की मजेदार साइकिल यात्राओं की कथा आगे बढ़ा रही हैं। पिछले अंकों में तुमने पढ़ा था कि किस प्रकार टिंकू को एक पुरानी जादुई साइकिल मिलती है, जो उड़ सकती है। टिंकू और किट्टी साइकिल यात्राओं पर निकलते हैं।

पद्मा के पन्ने

झील की यात्रा

जादुई साईकिल, किट्टी, ने कहा: "हम इंग्लैंड के सबसे सुंदर इलाकों में से गुजर रहे हैं, टिंकू–लेक डिस्ट्रिक्ट से (झील वाला जिला)!"

किट्टी धीमे–धीमे उड़कर जंगलों से घिरी पहाड़ियों की चोटी की तरफ बढ़ गई । वहां पर एक बहुत सुंदर बड़ी चट्टान थी, चोटी के ठीक ऊपर । टिंकू वहां पर शांति से बैठ गया, ठंडी ताजी हवा में सांस लेते हुए । "नीचे जो झील है, उसका नाम विन्डरमीयर है" किट्टी ने बताया ।

"श्श्श....... किट्टी। यह जगह इतनी खूबसूरत है कि आवाजों से इसमें खलल

नहीं डालनी चाहिये। मैं केवल चुपचाप बैठना चाहता हूं।''

टिंकू ने आज तक जितनी भी पानी भरी जगहें देखीं थी, यह झील उन सबसे ज्यादा साफ और शांत थी। पहाड़ी के निचले हिस्से से एक सड़क अपना घुमावदार रास्ता बनाती जा रही थी। एक छोटी सी बेंच सड़क के किनारे खड़ी थी, जिससे पहाड़ी के नीचे दिखता था।
''कितना सुंदर विचार है, वहां पर बेंच लगाने का, इस आशा में कि लोग केवल यहां रुक कर बैठेंगे और इस खूबसूरत नज़ारे को एक घड़ी देखेंगे!'' टिंकू ने सोचा।

ज्यादातर पेड़ मखमली हरे शंकु (**conifer**) थे। वे आकाश की नीलिमा के आगे चमकते लग रहे थे। पहाड़ी ढलान पर कुछ भेड़ें चर रहीं थीं जो छोटे सफेद बिन्दुओं जैसी दिख रहीं थीं।
''*भेडों का झुंड जो आराम से नदियों, हवाओं, सागरों, नर्म खेतों, पानी की श्वेत चादरों और निर्मल आकाश के पास से गुजर रहा हो ....*'' टिंकू ने कविता की पंक्तियां बोलीं ।
''चलो टिंकू, तुम्हें समय का अन्दाज़ ही नहीं है। हम इस दृश्य को करीब एक घंटे से देख रहे हैं ।''
टिंकू ने उसांस भरी और अनिच्छा से उठ गया ।
''वह देखो एक चकवा, टिंकू।'' किट्टी ने दिखाया, जब वे एक चमकते हरे कालीन के ऊपर से उड़ते हुए निकले ।
''क्या तुम्हें अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ की चकवे पर कविता याद है?

''यह तो कवि शैली की कविता है,'' टिंकू ने टोका, वर्ड्सवर्थ की कविता तो ऐसे शुरू होती है :

रे आकाशीय चारण/रे नभ यात्री/ कर सकता क्या उपेक्षा तू दुखों से भरी इस धरा की?

फिर वे दोनों चुप हो गए, दृश्य इतना रोमांचक, इतना शानदार था। यह ऐसा था जैसे कि किसी राजा के सामने,

उसके महल में खड़े हों । वह जगह अपने लिये आदर और चुप्पी की मांग करती थी ।
"अरे किट्टी, *धरा के पास है नहीं/कुछ भी/बेहतर इससे दिखलाने को*" टिंकू ने फिर कविता की पंक्ति बोली ।
"टिंकू हम लेक डिस्ट्रिक्ट के दक्षिणी हिस्से में हैं –चूने के पत्थर (limestone) के इलाके में।" किट्टी ने बताया। किट्टी समुद्र–तट पर उतर गई ।
"अगर टहलने जाना चाहते हो तो जाओ। तट की रेत पर तो तुम साइकिल नहीं ही चला सकते।" टिंकू तट के साथ–साथ चलता रहा। उस पथ का कुछ हिस्सा छोटे पत्थरों को बना था। कई जगह पर पत्थर लगभग पूरे सफेद थे। वह देखता रहा कि समुद्र ने किस प्रकार भूरी रेत पर घुमावदार आकार बना दिये थे। जब वह आखिरकार घूम कर लौटा, सांझ हो चली थी। किट्टी कहीं दिखाई न पड़ती थी। क्या टिंकू रास्ता भटक गया था? असम्भव! वह तो बस समुद्र तट के साथ साथ सीधा चलता गया था। हां, यह जरूर है कि रास्ते की कोई बड़ी पहचानें नहीं थीं।
"शायद मैं बहुत आगे निकल गया हूं। लेकिन तब भी मुझे वह मिल ही जानी चाहिये थी। किट्टी, तुम कहां हो? क्या तुम आंख मिचौली खेल रही हो? बाहर आ जाओ! ऐसा मजाक अच्छा नहीं होता । मुझें तुम्हारी चिन्ता हो रही है!"
टिंकू ने आंखें गड़ा कर देखा। और तब उसे वह नजर आई। केवल किट्टी के हैंडिल, जोकि कीचड़ से बाहर निकले हुऐ थे।
"अरे दोस्त, किट्टी, तुम वहां छिप ... .हे भगवान!" किट्टी छटपटा रही थी। वह अंदर धंस रही थी।
"टिंकू!" उसने कठिनाई से हांफते हुए कहा, "यह दलदल है। मैं इसमें डूबती जा रही हूं। मेरे बहुत नज़दीक नहीं आना। मुझे छोड़ दो और किसी सुरक्षित जगह पर चले जाओ। तुम्हें अब अपनी चिन्ता करनी है।"
टिंकू सन्न रह गया। उसे अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हुआ। आज के दिन की शुरुआत कितनी खूबसूरत रही थी। और अब यह एक भयानक सपने से भी बुरा था। किट्टी जोर लगा रही थी। जमीन में से अजीब सी धांसने की आवाज आ रही थी। टिंकू ने डरते डरते अपना पैर आगे रखा। कीचड़ ने

उसको धीरे से नीचे खींचा, जैसे कि कोई हाथ हो जो उसके भी नीचे खींचने की कोशिश कर रहा हो। इतना भयानक कि शब्दों में बताया नहीं जा सकता !

''मैं केवल यहां खड़ा रहकर अपनी सबसे प्यारी दोस्त को डूबते हुए नहीं देख सकता। बिल्कुल नहीं। यह हमारे साथ ही क्यों होना था? मैं क्या करूं? मैं क्या करूं?''

कोई आस पास नहीं नजर आ रहा था। अंधेरा तेजी से छाता रहा रहा था।

''बचाओ, बचाओ!'' टिंकू जितनी ताकत जुटा सकता था, उतनी ताकत से चीखा, ''मेरी साइकित दलदल में डूब रही है।''

टिंकू अपनी किस्मत पर भरोसा नहीं कर पाया। एक आदमी तेजी से उसकी ओर आ रहा था।

''सबसे पहले, रास्ते से हट जाओ। इसे मुझे संभालने दो, लड़के।'' आदमी ने एक लम्बा बांस आगे बढ़ाया और उसे साइकिल के टायर में फंसा लिया। फिर उसने एक रस्सी फेंक कर हैंडल बार को फंदे में फंसा लिया।

''ठीक है, अब मेरी मदद करो, लड़के । खींचो। अपनी ताकत का इस्तेमाल करो, पर याद रखो, हमें यह धीरे-धीरे करना है। अगर तुम कभी भी दलदल में फंस जाओ, तो यह याद रखो: इधर उधर हाथ पैर मत फेंको। जब तुम जल्दी जल्दी इस तरह की गति करते हो, तुम्हारे छटपटाते शरीर के चारों ओर हवा के छोटे-छोटे बुलबुले बन जाते हैं, जो तुम्हें और जल्दी डुबाते हैं । अब, खींचो।''

टिंकू ने बूढ़े आदमी के साथ रस्सी को खींचा। किट्टी डूब रही है या नहीं, अंधरे के कारण यह भी नहीं दिख रहा था ।

एक पूरे युग जैसे लम्बे समय के बाद बूढ़े आदमी ने कहा, ''ठीक है, बेटे। हमने तुम्हारी साइकिल बाहर खींच कर निकाल दी है। तुम मेरे साथ क्यों नहीं चलते? मेरी पत्नी तुम्हें और तुम्हारी साइकिल को जाने से

पहले धुला देगी ।''
टिंकू ने इस आमन्त्रण को खुशी से मान लिया ।
''मैं आपको ठीक से शुक्रिया अदा भी नहीं कर पा रहा हूं। मैं सच मे नहीं जानता कि आपको कैसे धन्यवाद दूं।''
''अरे बेटा, यह केवल एक पुरानी साइकिल ही तो है। चलो घर चलते हैं।''
वे एक छोटी सी पगडंडी से ऊपर चढ़े और टिंकू ने एक बड़ा सा पुराना घर देखा । उसकी खपरैलों की छत थी और पत्थर की दीवारें थीं, सलेटी रंग की पत्थर की दीवारें। बूढे आदमी ने टिंकू को पानी की टंकी दिखाई। टिंकू ने किट्टी को धोकर एक दीवार के सहारे खड़ा कर दिया। अपने कीचड़ सने जूते पोंछकर ही वह घर में घुसा। ''तुम्हारा दिन काफी कठिन गुजरा, है न, बरखुरदार।'' यह बूढ़े आदमी की पत्नी थी। ''क्या तुम यहीं कहीं के हो?'' वह एक प्लेट में स्कोन और चाय की केतली लाई थी। टिंकू रुकना चाहता था पर उसे बिल्कुल नहीं पता था कि वह उनके सवालों को जबाव कैसे देगा। उसे थकान लग रही थी, बहुत थकान।
''शुक्रिया, पर अब मुझे जाना ही पड़ेगा। मेरी मां परेशान हो जाएगी अगर मैं जल्दी ही घर नहीं पहुंचा। मुझे पहले ही बहुत देर हो चुकी है।''
यह बात काम कर गई।
''ठीक है, बेटा। तब तो तुम्हें जल्दी जाना चाहिये। किसी और दिन हमसे मिलने जरूर आना।''
''मुझे अफसोस है कि मैं नहीं आ पाऊंगा। मैं आज ही शाम को लेक जिले को छोड़कर जा रहा हूं। पर मैं आपको आपकी मदद के लिये अपने दिल की गहराइयों से धन्यवाद देना चाहता हूं।''
''कोई बात नहीं,'' उस दम्पत्ति ने टिंकू को हाथ हिला कर विदा दी। जैसे ही वे नजरों से ओझल हुए, टिंकू ने चिंतित स्वर में किट्टी से पूछा कि वह कैसी है। ''हां, परेशान न हो। हम घर पहुंच जाएंगे।''
ऐसा लग रहा थ कि किट्टी को उठने के लिये बहुत जोर लगाना पड़ रहा था, पर आखिरकार वे उड़ ही चले। वापसी की उड़ान पर किट्टी बहुत चुप रही। जब वे बरामदे में उतरे, टिंकू ने उसे उसके सामने वाली लाइट के ऊपर चूमा।
''मैं तुम्हारे साथ वापस आकर बहुत खुश हूं। तुम बहुत अच्छी दोस्त हो, किट्टी। मैं तुम्हे बहुत पंसद करता हूं।''
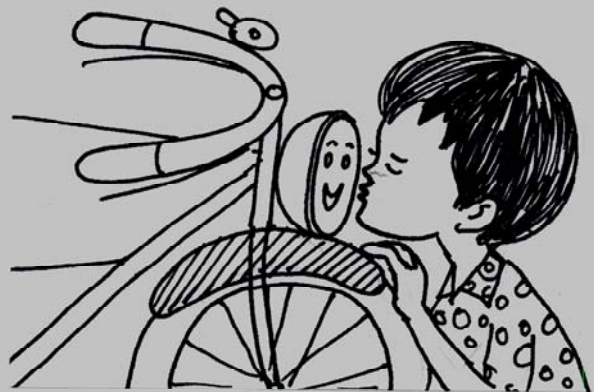
तितली और कली
हरी डाल पर लगी हुई थी नन्ही सुन्दर एक कली ।
तितली उससे आकर बोली तुम लगती हो बडी भली ॥
अब जागो तुम आंखें खोलो और हमारे संग खेलो ।
फैले सुन्दर महक तुम्हारी महके सारी गली गली ॥
कली छिटककर खिली रंगीली तुरंत खेल की सुनकर बात ।
साथ हवा के लगी भागने तितली छूने उसे चली ॥
-शोभा देवी मिश्र

संसार का सबसे बड़ा पक्षी

शुतुरमुर्ग संसार का सबसे बड़ा पक्षी है। इसकी लम्बाई सात-आठ फुट होती है। और वजन लगभग सौ किलो होता है। शुतुरमुर्ग नाम आपको कठिन लग रहा होगा, लेकिन इसका नाम जितना कठिन है, शुतुरमुर्ग उतना ही सीधा पक्षी है। इसकी पतली और लंबी टांगे इतनी मजबूत होती हैं कि यह एक लात में घोड़े की टांग तोड़ सकता है। शुतुरमुर्ग का धड़ पंखों से ढका रहता है। नर और मादा शुतुरमुर्ग को आसानी से पहचाना जा सकता है क्योंकि नर शुतुरमुर्ग के पंखों का रंग काला और मादा के पंखों का रंग भूरा होता है। अपने ऊंचे कद और तेज नजर के कारण शुतुरमुर्ग बहुत दूर तक देख सकता है। इसलिए यह घने जंगलों की बजाय खुले मैदान में रहना पंसद करता है। खुले मैदान में यह दुश्मन को दूर से ही देख सकता है। अपनी पतली व लंबी टांगों की मदद से यह एक घंटे में चालीस मील की रफ्तार से दौड़ लगा सकता है।

पहले तो शुतुरमुर्ग संसार में बहुत सी जगहों पर मिलते थे लेकिन अब सिर्फ अफ्रीका के खुले मैदानों में मिलते हैं। शुतुरमुर्ग की धारीदार गधों (जेबरा) से गहरी दोस्ती होती है। जेबरा अपने और शुतुरमुर्ग के लिए खाने की तलाश करते हैं और शुतरमुर्ग उनकी चौकीदारी। शुतुरमुर्ग पेड़ों की पत्तियां, बीज, फल, छिपकली, कंकड़-पत्थर इसलिए खाता है क्योंकि पेट में खाने को पीसने पचाने में यह मदद करते हैं।

एक नर शुतुरमुर्ग के पास बहुत सारी मादा शुतुरमुर्ग रहती हैं। ये सारी मादा शुतुरमुर्ग रेतीली मिट्टी में बने गड्ढे में एक जगह ही पन्द्रह से आठ तक अण्डे देती हैं, पर एक साथ नहीं- एक अण्डा रोज के हिसाब से। इन अण्डों को नर शुतुरमुर्ग सेता है। यह अपने पंखों और गरदन को फैलाकर जब अण्डों पर बैठता है तो यह दूर से पत्थर की तरह नजर आता है, इस कारण दुश्मन की नजर से बच जाता है। शुतुरमुर्ग की बदकिस्मती यह है कि यह उड़ नहीं सकता। इसका कारण इसकी

भारी भरकम कद-काठी है। लोग शुतुरमुर्ग का खूब शिकार कर रहे हैं इसलिए इसका जीवन खतरे में है। इसकी रक्षा करना बहुत जरूरी है, वरना शुतुरमुर्ग इस संसार में देखने को भी नहीं मिलेंगे।

क्या तुमने सुना है कि शुतुरमुर्ग की एक मज़ेदार आदत होती है? खतरे को देखकर वह रेत में मुंह छुपा लेता है और मान लेता है कि खतरा टल गया। इसीलिए जब भी कोई व्यक्ति मुसीबत आते देख आंख मूंद लेता है तो कहा जाता है कि वह शुतुरमुर्ग जैसा बर्ताव कर रहा है।

–'उछाव' से साभार
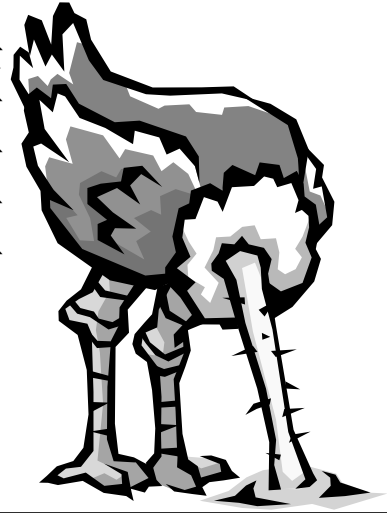
पहेलियों के उत्तर

1.
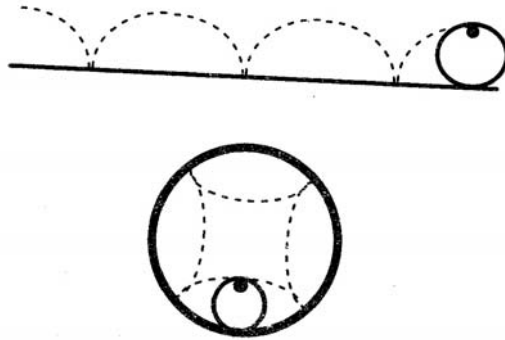
2.
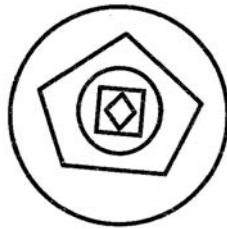
3.
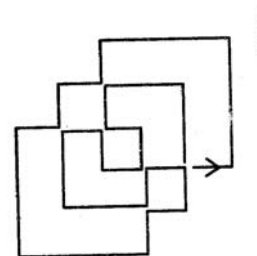
ताज़गी वाली हवा

अभी अभी कड़कड़ाती बिजली, गर्जन के बाद तेज बारिश हो कर चुकी है। हवा में सांस लो, आऽऽऽऽह! हवा शीशे सी साफ है और तुम्हारी सांस में ताजगी भर जाती है।

यह केवल कवि की कल्पना ही नहीं है। बिजली कड़कने से हवा में ओज़ोन गैस बन जाती है और यही गैस है जो हमें ताज़गी का अहसास देती है।

ओज़ोन असल में आक्सीजन ही है। फर्क सिर्फ इतना है कि आक्सीजन के अणु में सिर्फ दो परमाणु होते है जबकि ओज़ोन में तीन होते हैं - O_2 और O_3 । क्या आक्सीजन के एक परमाणु के कम ज्यादा होने से कोई बड़ा फर्क पड़ता है?

हां, पड़ता है: ओज़ोन और आक्सीजन बिल्कुल अलग अलग पदार्थ हैं।

बिना आक्सीजन के कोई जीवन नहीं है। इसके विपरीत ज्यादा मात्रा में ओज़ोन जीवित प्राणियों को मार सकती है। यह बहुत शक्तिशाली आक्सीकारक है। (चीजों का आक्सीजन के साथ मिलकर जलना या हवा की आक्सीजन के साथ मिलकर लोहे में जंग लगना आक्सीकरण या आक्सीडेशन के ही उदाहरण हैं।) अगर ओज़ोन जैविक पदार्थो से मिलती है(ऐसे पदार्थ जो जीवों या पौधों से निकले हों) तो यह उन्हें तुरंत जला देती है। अगर ओज़ोन किसी भी धातु पर हमला करे (सिवाय सोने और प्लैटिनम के) तो यह उन्हें तुरंत उनके आक्साइड में बदल देती है।

लेकिन मजे की बात यह है कि ओज़ोन के दो चेहरे हैं। सभी जीवित चीजों की हत्या करने वाली यह गैस पृथ्वी पर कई रूपों में जीवन की रक्षा करती है।

कितनी अजीब बात है न? आओ देखें कैसे। सूर्य की किरणों का एक हिस्सा है पराबैंगनी किरणें (ultraviolet rays) । अगर ये सब की सब धरती की सतह पर पहुंच जातीं तो धरती पर जीवन असम्भव था क्योंकि ये तीखी किरणें सभी जिन्दा वस्तुओं को जला

सकती हैं।

लेकिन खुशी की बात यह है कि परा बैंगनी किरणें अपनी ज्यादातर तेजी धरती से 20-30 किलोमीटर ऊपर खो देती हैं। इस ऊंचाई पर ओज़ोन गैस का एक कवच ध रती को ढके रहता है। यह पराबैंगनी किरणों को सोख लेता है।

आज जब वैज्ञानिक धरती पर जीवन की शुरुआत की बात करते हैं तो एक विचार यह भी है कि धरती पर पहले जीव तभी पैदा हुए जिस समय वायुमण्डल में ओज़ोन गैस की पर्त बनी।
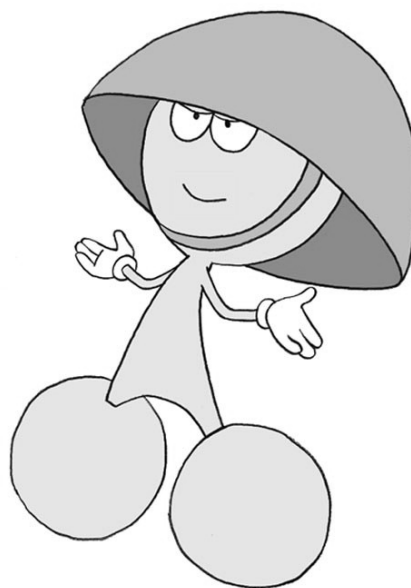
केवल यही नहीं, लोगों को धरती पर ओज़ोन की जरूरत भी है, और वो भी बड़ी मात्रा में। किस लिए ? रसायन उद्योग को इसकी बड़ी जरूरत है-इसकी शक्तिशाली आक्सीकरण की क्षमता के लिए। पेट्रोलियम उद्योग में लगे लोगों को भी इसकी जरूरत है। बहुत सारे जमीन से निकलने वाले पेट्रोलियम में गंधक (sulphur) मिला होता है। यह गंधक बहुत परेशान करता है- पाइपों, मशीनों और उबालने वाले ड्रमों को धीरे-धीरे 'खा' लेता है। (ऐसे तेल यानी पेट्रोलियम, जिसमें गंधक मिला हो, को खट्टा तेल कहा जाता है।) ओजोन गैस आसानी से इस तेल में से गंधक हटा सकती है और यही नहीं उसका sulphuric acid भी बना सकती है, जो बहुत काम की चीज है।

ज्यादातर पीने के पानी में से कीटाणुओं को मारने के लिए क्लोरीन गैस का इस्तेमाल किया जाता है। (हमारे घरों तक पाइप से पहुंचने वाले पानी से पहले क्लोरीन गैस गुजारी जाती है।) लेकिन क्लोरीन गैस पानी का स्वाद बिगाड़ देती है। इसके विपरीत अगर पानी में से ओज़ोन गैस गुजारी जाये तो सारे कीटाणु भी मर जाते हैं और उसका स्वाद बढ़िया रहता है। यही नहीं, ओज़ोन पुराने टायरों को नया कर सकती है, कपड़े और रेशों को सफेद कर सकती है और अन्य कई गजब के काम कर सकती है, इसीलिए दुनिया के वैज्ञानिक और इंजीनियर ज्यादा और सस्ती ओजोन गैस बनाने के तरीके ढूंढने में लगे हैं।

और फिर, ओज़ोन टूट कर आक्सीजन ही बनती है, जो हमारे लिए प्राणवायु है।

-'सिलुएट्स ऑफ कैमिस्ट्री,' डी.एन. ट्रिफोनोव तथा एल.जी. व्लासोब की पुस्तक के अंश पर आधारित

ओज़ोन छेद

क्या तुम जानती हो कि पृथ्वी के चारों ओर बने ओज़ोन के कवच में छेद बन गया है? यह इसलिए कि पृथ्वी के ऊपर मौजूद ओज़ोन की मात्रा में काफी कमी आई है। करीब 1970 के आसपास इसपर ध्यान गया कि आदमी द्वारा बनाए गए रसायन या गैसें, जो बड़ी मात्रा में वायुमंडल में छोड़ी जा रही थीं, वे ओज़ोन पर हमला करके उसे नष्ट करती जा ही थीं। इनमें CFC (chloro floro carbons) मुख्य थीं (जैसे Freon गैस) जिन्हें फ्रिज में ठंडा करने वाले द्रव के रूप में और कई तरह के स्प्रे में प्रयोग किया जाता था। CFC वायुमंडल में जाकर क्लोरीन गैस छोड़ते हैं जो ओज़ोन पर हमला करके उसे आक्सीजन में बदल देती है। एक CFC का अणु एक लाख ओज़ोन अणुओं को नष्ट कर सकता है। यही नहीं, मीथाहल ब्रोमाइड नामक एक कीटनाशक भी ओज़ोन परत पर हमला करता है।

परिणाम? हर साल अंटार्कटिक और आर्कटिक के ऊपर की ओजोन परत में छेद बन जाता है जो कई कई महीने रहता है। 1995-1996 की सर्दियों में तो ओजोन की मात्रा में 45 प्रतिशत तक कमी नजर आई। यह चिंता का विषय इसलिए है क्योंकि इससे सूर्य की तीखी पराबैंगनी किरणें पृथ्वी तक बेरोकटोक पहुंचेंगी। इससे चमड़ी का कैंसर, मोतियाबिंद जैसी बीमारियां हो सकती हैं, फसलों को नुकसान हो सकता है। यही नहीं, समुद्र में रहने वाले सूक्ष्म जीव प्लैंकटन बड़ी संख्या में नष्ट हो सकते हैं। प्लैंकटन को खाकर ही बहुत सारे समुद्री जीव जिंदा रहते हैं। प्लैंकटन पौधे होने के कारण बहुत सारी कार्बन डाइआक्साइड भी सोखते हैं। इनके घटने से पृथ्वी पर कार्बनडाइआक्साइड बढ़ने का भी खतरा है।

ओज़ोन परत में छेद को देखते हुए दुनिया के करीब 100 देशों ने ओज़ोन के लिए घातक रसायनों का उत्पादन और प्रयोग बंद करने का फैसला लिया है। बहुत से देशों ने तो CFC का प्रयोग बंद भी कर दिया है। कई अन्य देश इसे सन् 2010 तक पूरी तरह बंद करने का फैसला ले चुके हैं।

झूठ

डा0 अभिताभ शंकर राय चौधरी

बरगद की जड़ से झूला झूलते हुए कीश बंदर बोला, 'मामा - मामा, भूख लगी।'

ककुद सांड ने सींग हिलाकर कहा, 'खा लो बेटा, मूंगफली -।'

'मूंगफली तो घर में नहीं-'

'उसको लाने तेरी मामी आज सुबह मैके चली-' ककुद उठ खड़ा हुआ, 'बड़ी जोरों की भूख लगी है, भांजे। क्या किया जाय?'

'आइडिया!' कीश ने चुटकी बजाकर कहा, 'परसों मैंने देखा- एक मरे हुए बंदर पर लाल गमछा फैला कर एक आदमी उसके क्रिया करम के नाम पर चंदा इकट्ठा कर रहा था।'

'तो -?'

'बस, मामाजान, मैं लाश का पार्ट अदा कर रहा हूँ, और तुम मेरे कफन दफन के नाम पर -'

'बस, मैं समझ गया वत्स!'

देखते देखते बाजार के पास बरगद के नीचे कीश चुपचाप लेट गया, न हिलता, न डुलता। फर्स्ट क्लास लाश!

उधर, उस पर एक फटा हुआ अंगोछा डालकर ककुद सिर हिला हिलाकर लगा रोने, 'अरे मेरे भानजे, तू मुझे छोड़कर कहां गया? हाय राम!' ककुद अपनी पूंछ से सिर पर

आघात करने लगा।
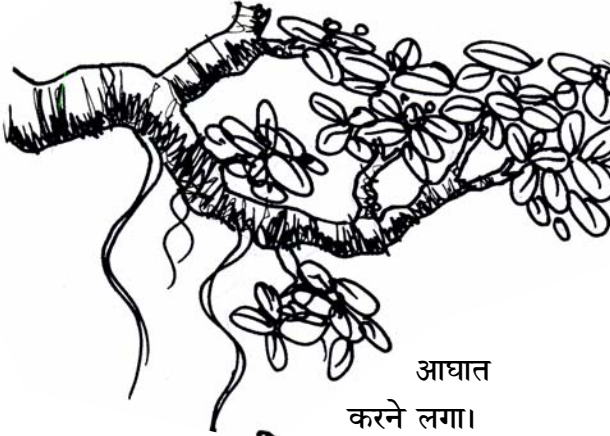
'अरे-रे-रे- क्या हुआ?' गंगा नहा कर जाते जाते एक बुढ़िया ठिठक कर खड़ी हो गयी, 'हाय राम! इस बंदर को क्या हो गया?'

'अब होना क्या बाकी है माई? जो होना था, हो गया-1' ककुद गला फाड़ कर रंभाने लगा, 'हे बाबा- बिसनाथ'

तब तक मजमा इकट्ठा हो गया, और सहानुभूति से तर बातें, 'अरे, - इसने तो अभी जिन्दगी देखी नहीं होगी-'

'किसी आम के पेड़ पर चढ़कर आम खाया भी न होगा-'

और साथ ही साथ पैसे की बरसात।

थोड़ी देर में सीरियल खतम। भीड़ छंटने लगी। ककुद चुपके से बोला, 'अभी हिलना मत, मैं इन पैसों से जलेबी खाकर आता हूं।'

'वाह-मामा-वाह।'

मृतक का रोल अदा करते करते एक आंख भींच कर कीश मन ही मन बोला, 'मामाजान, अब शहादत की पारी तुम्हारी है। मुझे जोरों की भूख लगी है।'

''ओके, ओके' कहते हुए बाजार की दूसरी ओर जाकर - इधर उधर देखकर - लड़खड़ाते हुये ककुद लेट गया। उतने छोटे गमछे से तो उसका पूरा शरीर ढका नहीं जा सकता था, सो केवल उसके मुंह पर उसे बिछा कर कीश किचकिचाकर रोने लगा। 'अरे मामा श्री ! हमें छोड़कर कहीं न जाना-!'

फिर से उसी दृश्य का रिटेलिकास्ट....

मजमा। लोगों का खुसुर फुसुर, 'क्या हो गया- इस बेचारे को?'

'देखो कैसे पछाड़ खाकर मामा के लिए रो रहा है। कोई अपने बाप के लिए भी इतना नहीं रोता- !'

हमदर्दी और टन ठना ठन....। पैसा लगा गिरने । अठन्नी, चवन्नी, सिक्के...

सीन को और दर्द भरा बनाने के लिए कीश हनुमानजी की स्टाइल में लगा छाती पीटने, 'तुम मुझे छोड़कर गये तो मैं जी कर क्या करूंगा?'

तभी उसकी नजर ककुद के पेट पर गयी। रोते रोते सिर झुका कर बोला, 'अरे मामा, धीरे से सांस लो। इतना पेट न हिलाओ......।' उसे भूख लगी थी। सोचा कुछ और आमदनी हो जाय... इतने में वही बुढ़िया मंदिर दर्शन करके इधर से घर जा रही थी, फिर उसके कदम ठहर गये, 'अरे ओ मइया! यह क्या? थोड़ी देर पहले तो बंदर मरा पड़ा था। सांड रो रहा था। अब सांड के ऊपर रामनामी और बंदर की आंखों में पानी?'

लोगों का दिमाग ठनका -अरे यह बंदर तो हम ही लोगों को उल्लू बना रहा है! एक मुनीमजी ने अपनी ऐनक भौंह के ऊपर उठाकर गौर से देखते हुए कहा, 'देखो देखो- सांड़ का पेट ऊपर नीचे हो रहा है।

'यह तो सांस ले रहा है।'

'अच्छा, यह बात...।'

देखते देखते लोगों के हाथों में लाठी। ले दनादन, दे दनादन।

'अरे बापरे- भानजे! मैं तो सचमुच मरा।'

कहते हुए ककुद दुम उठाकर भागा।

कीश जलेबी तो खा न सका। मार जरूर खाई। ढेले, पत्थरों से लोगों ने उसकी खबर ली। बरगद पर चढ़ कर वह भागा।

थोड़ी देर बाद दोनों एक गली में मिले।

कीश की आंखों में सचमुच के आंसू थे। 'मामा, तुमने तो कम से कम जलेबी भी खाई थी, मैं तो भूखा ही रह गया। ऊपर से- '

'अरे, अब जले पर नमक न छिड़कना भांजे। दान के साथ दक्षिणा तो मेरे लिये भारी पड़ गयी।' फिर कुछ उदास होकर ककुद बोला, 'सचमुच, झूठ का फल पहले भले मीठा लगे, आखिर उसका स्वाद कड़ुआ ही होता है।'

❋❋❋

कथा : अंशुमाला, कुणाल
चित्र :
अरे रे रे रे... छोटू को ठंड लग गई। चलो, चलो कपड़ा पहनो।
लो गरम बनियान पहनो!
आऽ... छीं:
यह भी!
गला भी लपेटो!
सिर भी!

हाँ, गर्म जुराबें पहनना मत भूल जाना
बेचारा सर्दी में स्कूल जा रहा है...
माँ, माँ, आज मैंने स्कूल में पहला इनाम जीता!
किस चीज का?
फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में ऊन का गोला बनने के लिए
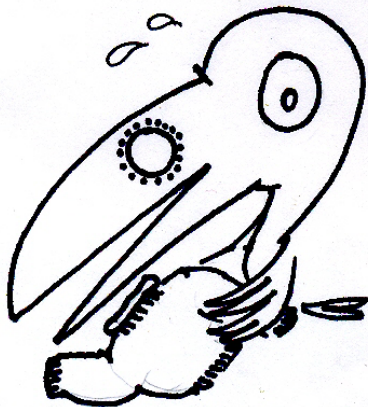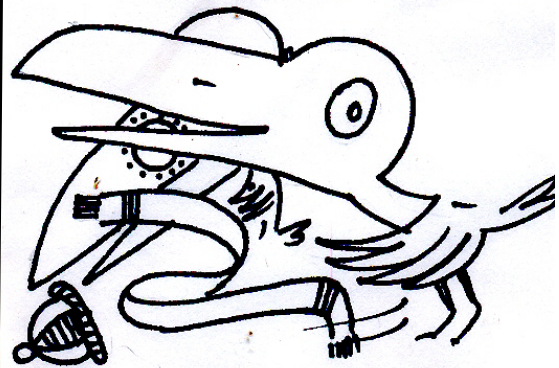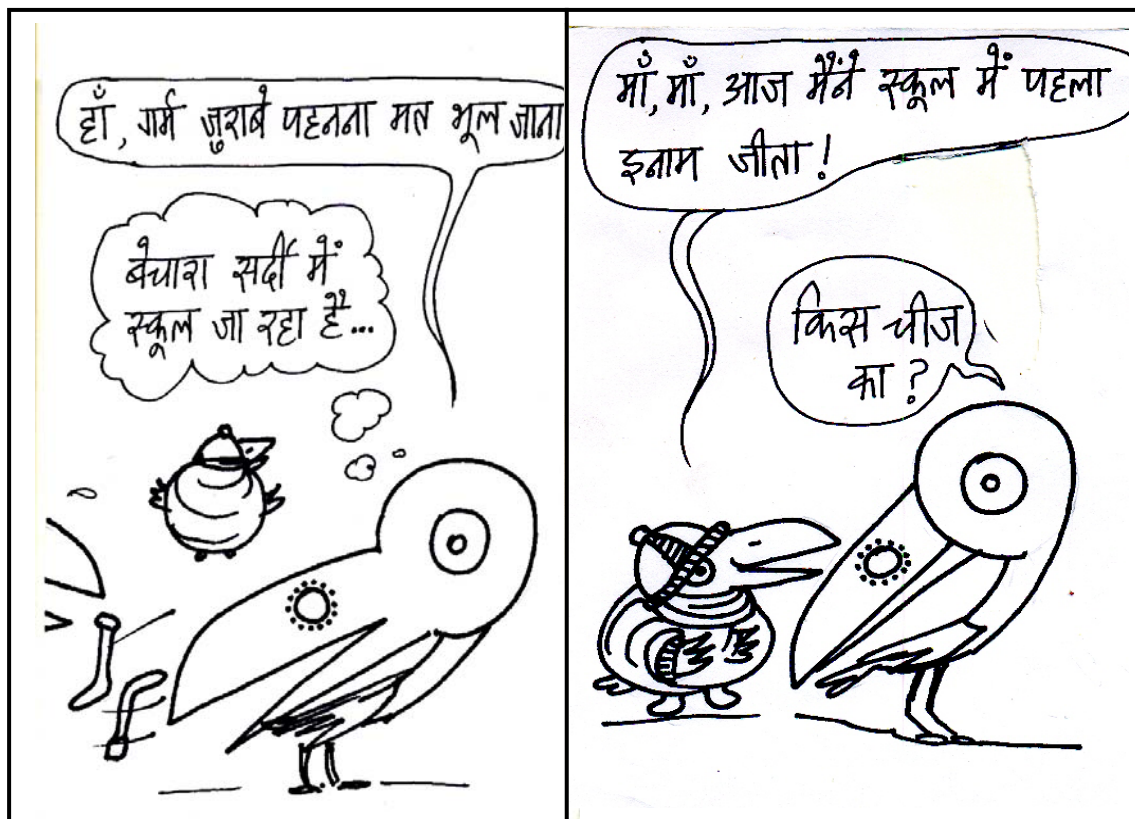
लिखवाई की कहानी

पिछले अंक के आगे

पहली लिपि का जन्म

–डॉ0 अनीता रामपाल

लगभग छः हज़ार साल पहले (लगभग 4000 ईसा पूर्व) की बात है। दुनिया के सबसे पहले शहर बनने लगे थे। शहरों के साथ व्यापार भी जोर पकड़ रहा था। व्यापार का हिसाब रखने के लिए लिखने की ज़रूरत पड़ती थी। केवल याद रखने से लेन–देन का कारोबार चल नहीं पा रहा था। राजा भी अपना शासन बनाए रखने के लिए लिखित आदेश जारी करने लगे थे। शासन की तिजोरी भरने के लिए किसानों से कर भी वसूल किया करते थे। उसका भी पूरा लेखा जोखा रखा जाता।

मेसोपोटामिया (जहां आज का इराक देश है) की पुरानी लिपि को ही सबसे पहली लिपि माना गया है। मेसोपाटामिया के साथ मिस्र, चीन और भारत की पुरानी सभ्यताओं ने भी अलग–अलग लिपियां बनाई थीं। इन पहली लिपियों में आज जैसे अक्षरों की वर्णमाला नहीं थी, चित्र–संकेतों से ही शब्द बनाए जाते थे। मेसोपोटामिया की लिपि का नाम पड़ गया है 'क्यूनीफॉर्म' जिसे हिन्दी में हम 'कीलाक्षरी' भी कहते हैं। चूंकि इसके संकेत कीलों की तरह दिखते हैं। दरअसल लकड़ी की नुकीली क़लम से गीली मिट्टी की पट्टी पर इसे लिखा जाता था।

शुरू–शुरू के चित्र संकेत आसान थे। जैसे, बताइए इन संकेतों का क्या अर्थ होगा? बूझ लिया? पहला संकेत था 'गाय' का दूसरा 'बैल' का । बैल का इस संकेत और आदिमानव द्वारा बनाए गए जंगली बकरे के संकेत में कितनी समानता है। जबकि दोनों संकेतों के बनने के बीच दस–पंद्रह हजार सालों का अंतर है! चित्रों से चित्रलिपि बनने में कई हजार साल लग गए थे।

जंगली बकरा
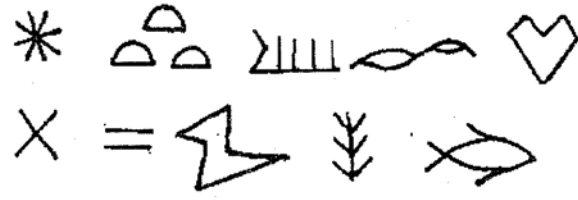
अब ऊपर दिए मेसोपोटामिया के चित्र संकेतों को पहचानने की कोशिश करें। इन दस संकेतों मे से आप कितने बूझ पाए ?

नुकीली क़लम से घुमावदार संकतों को मिट्टी पर लिखने में दिक्कत आती थी। इसलिए इन्हें बदलकर कंटीला बना दिया गया। साथ ही संकेतों को टेढ़ा करके लिखने लगे ताकि लिपि को बाएं से दाएं लिख सकें। जैसे गाय के संकेत को बदलकर कंटीले संकेतों में पहले यूं कर दिया और फिर उसे टेढ़ा करके यूं लिखने लगे।

इसी तरह पहाड़ के इन गोलाकार संकेतों को पहले कंटीला बनाया और फिर घुमाकर यूं लिखने लगे।

लेकिन इन बदलावों से ये तथा अन्य सभी संकेत इतने जटिल हो गए कि फिर उन्हें समझना मुश्किल हो गया। आम लोग तो इन्हें पढ़ नहीं ही पाते थे।
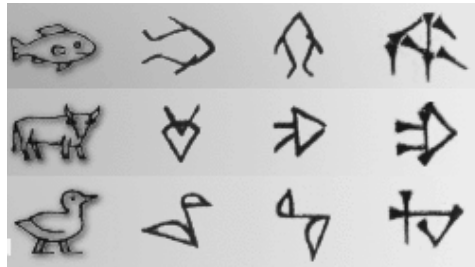
लिपि जटिल होने के साथ-साथ काफ़ी विकसित तो हुई। पर इसे जानने वाले लोग बहुत ही कम थे। और लिखना उनका धंधा बन गया था। जिसके दम पर उन्होंने अपनी धाक

इस मिट्टी की टिकिया पर मेसोपोटामिया के एक साहूकार ने हिसाब लिखकर रखा दिया कि उसने अपने कितने गधे किस-किसको कर्ज़ में दिए। यह टिकिया 2500 ईसा पूर्व में लिखी गई थी।

जमा ली थी। उन लिपिकों (लिखना जानने वालों) की अलग एक उच्च जाति-सी बन गई थी।

अक्सर राजाओं को लिखना नहीं आता था। राजा अपने लिपिकों को खुश रखते थे ताकि वे उनकी ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा लिखते रहें। और उन्हीं से राजाओं का कारोबार भी चलता रहता। राजा कहीं भी दान करते तो तुरन्त शिलालेखों पर पूरा ब्यौरा लिखवा देते कि कब कितना दान किया था। देवी-देवताओं की प्रशंसा के लेख भी लिखवाए जाते थे। साहूकार अपनी सभी लेन-देन का हिसाब लिखवाया करते।

यही नहीं, क़ानून, राजनीति, धर्म, खगोल की पूरी पुस्तकें ही मिट्टी की पट्टियों पर लिख दी जाती थीं। जैसे एक मिट्टी के पट्टी पर यह जानकारी मिलती है कि शुक्र ग्रह उन्हें कब-कब दिखा था। पहले की चित्रलिपियां इतनी मुश्किल हो गई थीं कि इनको सीखना बड़ी लगन का काम था। कुछ ही बच्चों को चुनकर लिखना सिखाया जाता था और उनकी ख़ूब पिटाई भी होती थी। उन्हें छ: सौ से अधिक चित्र संकेत याद करने पड़ते थे।

सोचिए, आज भी चीन देश की लिपि के कई हज़ार अलग-अलग संकेतों को वहां के बच्चे कैसे सीखते होंगे। हमें तो क, ख, ग जैसे अपने कुछ ही अक्षरों को लिखना सीखना इतना मुश्किल लगता है। है न ? और उस पुराने ज़माने में मेसोपोटामिया के बच्चों को गीली मिट्टी या पत्थर पर लिखना पड़ता था। उनके पास काग़ज़ नहीं था।

-(अगले अंक में जारी)

बिल्ली के बच्चे

लेखक: चेखोव

नए, लहरदार रोशनी के बिछावन पर सोते हुए सपनों की दुनिया के सरताज, उन छोटे-छोटे 'वान्या' और 'निना' के उस बचपन में केवल सुख के अलावा और था ही क्या? वान्या बचपन के 6 वसंतों का अनुभव कर चुका था, और निना चार वर्ष की थी! वह बड़ा भाई था और निना उसकी छोटी-सी बहन।

सूर्य की सोने सी किरण ने इठलाकर उनसे कहा- आओ। ....उठो न.....चलो खेलें। ....परन्तु वे तो सोते ही रहे, उन्हें उसमें सुख था।

आया आई। उसने उन्हें गुदगुदाकर कहा- छि:छि:! अभी सो ही रही हो।... देखो न, जितने राजा बेटे होते हैं, वे तो अब तक नाश्ता भी कर चुकते हैं... और एक तुम लोग हो।

लेकिन वे तो सोते ही रहे।

आया ने उन्हें फिर गुदगुदाया।

उनींदी आंखों को ज़रा-सा खोलकर निना ने कहा- आया! चा...!

वान्या इसी एक सूत्र को लेकर निना को फटकारना चाहता था।........और वह उसके इस चीखने पर फटकारने वाला ही था कि दूसरे कमरे से मां की आवाज आई- ''बिल्ली को आज दूध जरूर पिला देना, उसने बच्चे दिए हैं!'' वे नौकरानी को आदेश दे रही थी।
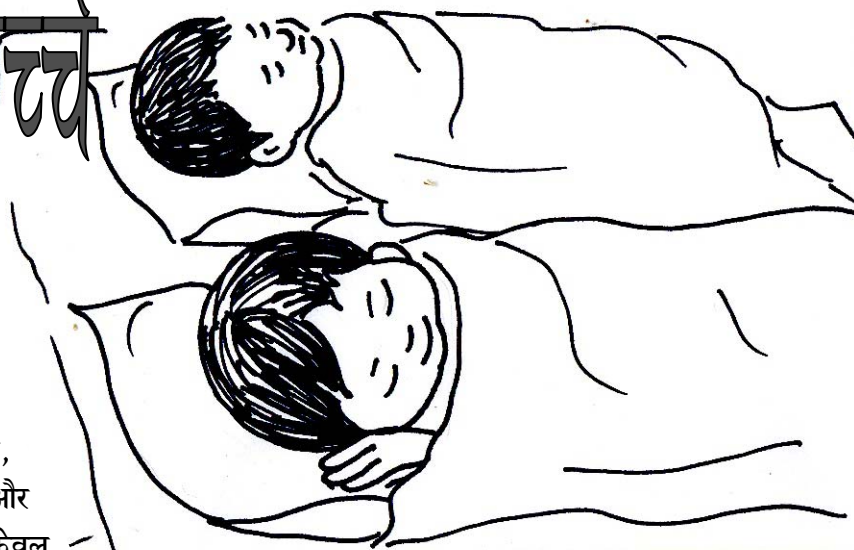
दोनों ही -वान्या और निना-दोनों ही सहसा चौंक पड़े। उन्होंने एक-दूसरे को प्रश्न वाली दृष्टि से देखा। वे कितने प्रसन्न हो उठे! उनमें कितनी स्फूर्ति आ गई थी? -बिस्तर से उछलकर, लालसा उन्हें रसोई की ओर दौड़ाती हुई ले गई। नंगे पैर, रात की पोशाक में ही, पागल से बनाकर।

तिपाई के नीचे, छोटे से बक्स में झांककर उन्होंने देखा-एक! दो!! तीन!!! तीन-तीन बच्चे। सिकुड़े हुए, एक दूसरे से चिपककर बैठे थे! भूरे-भूरे रोम,

नीली-सी बंद उनकी आंखें थीं। कूं-कूं करते हुए मुन्ने मुन्ने बिल्ली के बच्चे, तीन-तीन!!! और उस समय बिल्ली के कठोर हृदय में उठती हुई उसकी मातृभावना उसे उनके पास ही, उनकी रक्षा के लिए बैठाए हुए थी।

बच्चों ने अपने छोटे-छोटे हाथों से उन्हें बक्स के बाहर निकाला और फर्श पर रख दिया। अपलक आंखो से, उन्होंने कोशिश की, बिल्ली की भावनाएं पढ़ लेने की......... परन्तु वह न तो गुर्राई, न उनकी ओर झपटी। उसके नेत्रों से प्रेम और प्रसन्नता की ज्योतिर्मयी आभा निकल रही थी।

आपने अनुभव किया होगा।..........मैं बतलाता हूं- अबोध शिशुओं के प्रभावशाली श्रेष्ठ शिक्षक होते हैं, उनके घर में पले हुए नासमझ जानवर। वे उन्हें, खेल ही खेल में, क्षमा, सहनशीलता और सरलता का पाठ पढ़ा देते हैं।....... आप ही बोलिए, क्या आप अपने बड़े-बड़े बालों वाले सुन्दर झबरे कुत्तों को, लाल-पीली-काली रंग-बिरंगी चिड़ियों को, मुर्गों को, बिल्लियों, जिन्हें अपनी प्रसन्नता के लिए सताते थे, जिनकी दुम को घसीट-घसीटकर हम प्रसन्न होते थे, और उन्हें पीड़ा होती थी- आप ही कह दें, क्या आप उन्हें अब तक भूल सके हैं? उन्होंने हमें जो मूक शिक्षा दी है, वह 'कार्ल-कार्विच' के रूखे एवं लम्बे चौड़े शिक्षाप्रद भाषणों से, कहीं अधिक प्रभावशालिनी है। हम आज उन्हें भूल गए हैं, और हम अपनी शिक्षिका के उन प्रयोगों
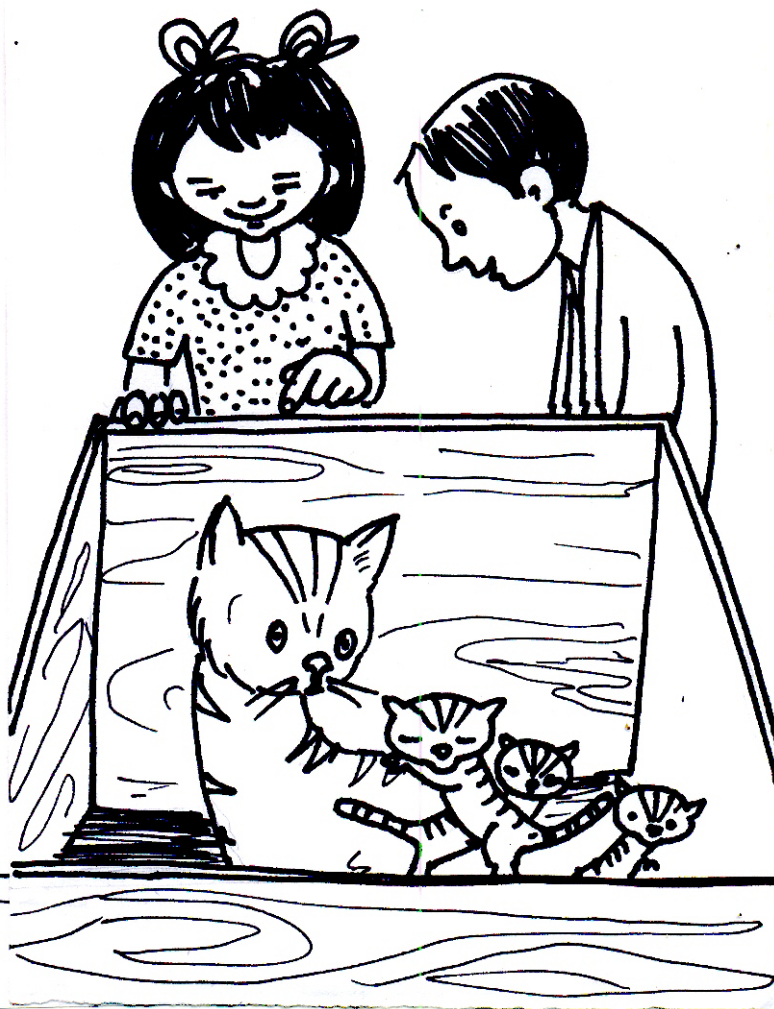
को भी भूल चुके हैं, जिसमें उसने हमें यह प्रमाणित कर दिखलाया था कि पानी 'हाईड्रोजन' और 'आक्सीजन' के मेल से बनता है।.....परन्तु हम अपने उन पालतू जानवरों द्वारा दी हुई शिक्षाओं को आज तक नहीं भूल सके।

'कितने मुन्ने-मुन्ने!' बच्चों सी भोली प्रसन्नता की ऊंचाई तक पहुंचकर निना हंसी और कहने लगी- 'ये तो बिल्कुल चूहों जैसे हैं।'

'एक, दो, तीन! वान्या ने हिसाब लगाकर कहा- 'एक मेरा, एक तुम्हारा, और एक?....एक और किसी को दे देंगे।' ममता से भरी बिल्ली ने पुचकारकर कहा-मर्रम..मर्रम!

वे उन्हें बड़ी देर तक देखते रहे। उन्हें पुचकारते थे, उनके शरीर को प्यार से थपथपाते थे, उन्हें इतने से भी संतोष न हुआ। अपने लंबे से गाऊन में उन्हें छिपाकर वे ले चले।

'ममा, बिल्ली ने बच्चे दिए है!' -वे प्रसन्नता से चीख उठे।

कमरे में बैठी हुई उनकी माता किसी अनजान पुरुष से बातचीत कर रही थीं। उसने देखा- न तो उन्होंने कपड़े ही बदले हैं, न मुंह ही धुलवाया है...वह मारे क्रोध के खीझ उठी- ''अपने कपड़े बदलो जाकर। .... बेशर्म कहीं के!.... जल्दी जाओ, नहीं तो पीटूंगी।"

अपने खिलवाड़ के आगे, उन्होंने मां के आदेश पर कोई ध्यान न दिया। बच्चों को फर्श पर रखकर वे उनके साथ खेलने लगे। बिल्ली उनके साथ ही फिर रही थी।.... नौकरानी आई, उन्हें उठाकर ले गई। हाथ-मुंह धोना, प्रार्थना करना, नाश्ता, कपड़े बदलना! ओह!- वे जल्दी से जल्दी इन सब कामों से छुट्टी पाकर बिल्ली के बच्चों के पास दौड़ जाना चाहते थे।

उस दिन वे सब कुछ भूल चुके थे- खाना, पीना, मित्र, खेल-खिलवाड़ सभी कुछ। वे थे और उनके बिल्ली के बच्चे। आप यदि उन्हें बहुत सी मिठाई देकर, अथवा तीन-चार हजार पेनी भी देकर उनसे बिल्ली के वे छोटे-छोटे बच्चे मांगते, तब भी, मेरा विश्वास है, वे आपके प्रस्ताव उसी क्षण ही ठुकरा देते। उन्हें पाकर उन्हें, जैसे किसी भी सुख की इच्छा नहीं रह गई थी।

मिठाई के छोटे-छोटे टुकड़े, फल, दूध सभी कुछ तो वे उनके लिए लाए थे, परन्तु कमबख्त बिल्ली ने उसे झपटकर खा लिया।

'मेरी राय में तो इनके अलग-अलग मकान बना दिए जाएं'- वान्या ने गंभीरतापूर्वक प्रस्ताव किया-.... और बिल्ली केवल कभी-कभी उनसे मिल आया करेगी, बस!...

हैट रखने के तीन डिब्बे रसोई के तीन कोनों पर रख दिए गए। वे उन तीनों के घर थे।... परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चों को अभी अपनी माता की सुरक्षा में रहने की आवश्यकता थी, क्योंकि थोड़ी देर पश्चात् जब वे लौटकर आए तो उन्होंने देखा, वे फिर अपनी मां के पास बैठे हुए थे। उन्हें इस पर आश्चर्य होने लगा- शायद बिल्ली उन्हें उठा लाई होगी!

'अच्छा निना, एक बात तो बताओ....' - निना उत्सुकता से उसका मुंह ताकने लगी....'यह बिल्ली तो उनकी मां है,.... और फिर बाप......?'

'हां, उनके पिता फिर कौन हैं?' -निना ने भी कह दिया।

'भाई, पिता बिना तो ये कभी जीवित रह नहीं सकते!' -वान्या बोला।

तब वे दोनों ही इस कठिन समस्या को हल करने बैठे।...

'मैंने एक बात सोची है।' वान्या ने कहा।

मुट्ठी से ठुड्डी को पकड़े गंभीरतापूर्वक इस प्रश्न पर विचार करती हुई निना ने केवल अपनी आंखों को उसके मुंह पर गड़ा दिया।

'वह जो घोड़ा नहीं है, लाल-लाल! जिसकी दुम टूट गई है।'...

'परन्तु वह न जाने कहां पड़ा हुआ है?... शायद फेंक दिया गया।'

'नहीं-नहीं फैंका नहीं गया।....मैं जानता हूं। ...वह कुर्सी के नीचे पड़ा है।' वान्या ने बतलाया।

घोड़ा निकाला गया। उसे झाड़ा-पौंछा गया, फिर वे उसे बच्चों के सामने रख आए।

'अब देखना चाहिए, ये बच्चे अपने पिता के साथ कैसा व्यवहार करते है।'

.....उस दिन उनका एक छोटा-सा संसार था, और उसमें थे- केवल वान्या, निना और बिल्ली के तीन बच्चे। उन्हें अन्य किसी भी वस्तु की इच्छा न थी। उनकी प्रसन्नता का पारावार न था।

भोजन के कुछ क्षण पूर्व एक बच्चे को पापा की लिखने-पढ़ने वाली टेबुल पर बिठाकर, वान्या उससे खिलवाड़ करने लगा। वह रेंगा- पापा के लिखने का कागज खराब हो गया।

कमरे में आते हुए पिता ने क्रोध से कहा- 'यह सब क्या है!'

'यह ...बिल्ली ने बच्चे दिए हैं, पापा!'

'अच्छा ठहरो, और बतलाता हूं तुम्हारे बिल्ली के बच्चे!....इन्हें यहां क्यों लाए ? ... मेरे तमाम कागज खराब कर दिये!'

वान्या को इस बुरे बर्ताव पर अत्यंत आश्चर्य हो रहा था। उसने सोचा था - पापा......? पापा ने उसके कान पकड़ते हुए चिल्लाकर कहा- 'स्टीफेन। ...इस कूड़े को नदी में बहा आओ।'

वान्या और निना पर मानो बिजली गिर पड़ी। उनके बिल्ली के बच्चे नदी में

बहा दिए जाएंगे?
'पानी में जब वे फेंक दिए जाएंगे..-तैरना तो जानते नहीं,-डूब जाएंगे, हां, अवश्य ही डूब जाएंगे। हाय, कैसे चिल्लाएंगे तब वे!'
कल्पना करते ही वे रोने लगे। बहुत रोए, तब पिता ने उनको घर में रखने की मंजूरी दे दी। ... परन्तु, अब वान्या और निना उनके पास खेलने नहीं जा सकते थे।

उस दिन, दिन भर वे रोते और दंगा करते रहे, और अपनी माता से भी रूठे रहे। शाम के समय जब उनके चाचा 'पेटुशा' ने घर में प्रवेश किया, उन्होंने अपने पिता के उस बुरे बर्ताव की बात उनसे भी कह दी।

'चाचा!' -उन्होंने उनसे प्रार्थना की-'.. ममा से कहकर उन्हें दूसरे कमरे में रखवा दीजिए।..अच्छा!'
मुस्कराते हुए चाचा ने कहा- 'अच्छा'।
पेटुशा कभी कभी उन लोगों से मिलने आया करते थे, और उनके साथ उनका भूरा-झबरे बालों वाला कुत्ता 'नीरो' भी।
अब वे सोचने लगे-अच्छा यदि नीरो को उनका बाप बना दिया जाए, तो कैसा हो?

'हां, अच्छा तो है। वह घोड़ा तो खिलौना है। नीरो सचमुच का, जिंदा बाप होगा।'
और वे प्रतीक्षा में थे, जब पापा ताश खेलने बैठ जाएं, और ममा भी..तब, नीरो को वहां से ले चला जाय।

'नीरो गया कहां?' -निना ने पूछा।
'यहीं कहीं होगा।...आ जाएगा।'
वे दोनों उस सुखद क्षण की प्रतीक्षा में बैठे।...और वह समय आ ही गया।
'चलो',-वान्या ने अपनी बहन से कहा।
वे कुर्सी से उतरे। ममा खेल में मशगूल थीं और पापा भी...।
स्टीफेन वैसे ही कमरे में आया, उसके हाव-भाव नाजुक थे, वह जैसे उस समय भयभीत-सा हो रहा था- 'मैडम!....मुझे क्षमा कीजिएगा।...नीरो बिल्ली के बच्चों को खा गया.....'

उस दिन वान्या और निना के लिए यह दुखभरी खबर संवाद कितनी भारी चोट थी!...आप ही सोचें।
ममा ने उसकी ओर देखा। उसने फिर कहा-'जी, वह तो सीधा यहां घुसता ही चला गया।...मैं वहां था नहीं, और......और......'

बच्चों को विश्वास था कि पापा और ममा, सब लोग, नीरो को पीटेंगे और घर से निकाल देंगे, परन्तु वे तो उसे थपथपाते हुए, उसकी भूख पर आश्चर्य प्रकट कर रहे थे, हंस रहे थे।

...और बिल्ली!- प्रत्येक कमरे के प्रत्येक कोण को देखती हुई दयनीय वाणी से कर रही थी -म्याऊं!- माता के शुद्ध मन से वात्सल्य की लहर उठ रही थी-म्यांऊ!म्याऊं!!-मां अपने बच्चों को खोज रही थी।
घड़ी ने दस बजाए। माता ने उन्हें सो जाने की आज्ञा दी।

घर भर...मजे करने में व्यस्त था, हंस रहा था, और शैया पर पड़े हुए वे दो छोटे-छोटे बच्चे रो रहे थे- बच्चों के बिना उनकी बिल्ली को कितनी पीड़ा हो रही होगी। वे रो रहे थे, नीच नीरो ने उनको चबा डाला, उसे कोई सजा नहीं?......वे रो रहे थे!......वे छोटे-छोटे बच्चे!!
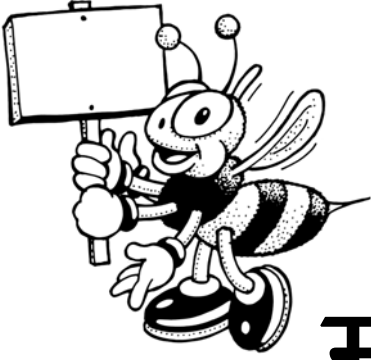
मधुमक्खियों का छत्ता

मधुमक्खी का छत्ता एक पूरी बड़ी बस्ती है जिसमें ढेरों काम साथ साथ चलते हैं और वो भी कमाल की निपुणता व तेजी के साथ। एक छते में 1 हजार से लेकर 1 लाख तक मधुमक्खियां हो सकती हैं। इनमें से दो तरह की मधुमक्खियां होती हैं - घरेलू मक्खियां और घुमन्तू मक्खियां। घरेलू मक्खियों की पूरी फौज छत्ते को साफ सुथरा रखती है, उसमें हवा का इन्तजाम करती है और शहद रखने के नए कमरे या कोष्ठ बनाती है। घुमन्तू मक्खियां ज्यादा अनुभवी होती हैं जो घरेलू जिम्मेवारियां सीख कर आगे बढ़ चुकी होती हैं। वे फूलों का रस इकट्ठा करती हैं।

मक्खियां अपना रास्ता कैसे खोजती हैं?

अक्सर रास्ते में चट्टानें या दूसरी रुकावटें आने पर मक्खियों को घूम कर जाना पड़ता है लेकिन वापस लौटते समय वो घर का सीधा रास्ता खोज ही लेती हैं । वैसे वे सूर्य की स्थिति से और रास्ते के चिन्हों से रास्ता पहचानती हैं जैसे जंगल, सड़क या तट को देखकर ।

सूर्य छिपा होने पर, या रात होने पर भी मक्खियां अपना रास्ता खोज लेती हैं। इसमें इनकी बेहद संवेदनशील ऑखें इनकी मदद करती हैं ।

एक बार उत्तरी गोलार्द्ध की मक्खियों को प्रयोग के तौर पर दक्षिणी गोलार्द्ध ले जाया गया । सूर्य की स्थिति अब उलट गई थी । मक्खियां कुछ समय तक भटकी रहीं, लेकिन एक महीने से कुछ ज्यादा समय में ही उन्होंने सूर्य की दिशा को फिर से पढ़ना सीख लिया था ।
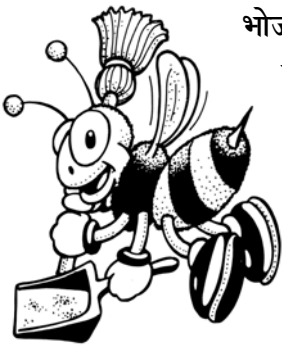
वैज्ञानिक वॉन फ्रिश ने कहा ये जीव एक दूसरे को अपनी खोजी हुई भोजन की जगहों के बारे में जो बताते हैं वह हम तो कीड़ों से कभी उम्मीद भी नहीं कर सकते थे । इनका दिमाग एक बाजरे के दाने से बड़ा नहीं होता । स्नायु कोशिकाओं, जिनसे दिमाग बना होता है, की आश्चर्यजनक रचना का इससे बढ़िया उदाहरण कहीं नहीं मिलेगा ।

छत्ते में आबादी

जब शहद इकट्ठा करने का मौसम अपने चरम पर होता है, मधुमक्खियां कड़ी मेहनत करती हैं, लेकिन एक मधुमक्खी का जीवन एक महीने से ज्यादा नही होता । इसलिये एक छत्ते में रोज 1000 तक मधुमक्खियां मर सकती हैं । केवल रानी मधुमक्खी अंडे दे सकती है और केवल वही तेजी से मरने वाली कामगार मक्खियों की भरपाई कर सकती है । रानी मक्खी खुद भी मशीन की तरह काम करती है और पूरा जीवन लगातार बिना रुके अंडे देती रहती है । केवल हफ्ते भर की उम्र में वह छत्ते के बाहर तीन या चार उड़ानें भरती है। उसकी शक्तिशाली गंध का पीछा करते हुए छत्ते की नर मक्खियां वहां पहुंच जाती हैं । रानी से विवाह करने के बाद नर मक्खियां मर जाती हैं । छत्ते में केवल रानी मक्खी लौटती है और अगले पांच साल तक अंडे देती रहती है । यह तब देखा गया है कि कुछ रानियां एक दिन में 3000 तक अंडे देती है, एक मिनट में दो अंडे, रात दिन बिना रुके ।

ऐसे छत्ते में जहां आबादी बहुत न बढ़ी हो, और शहद की मात्रा कम न पड़ रही हो, रानी बूढ़ी न हुई हो, ऐसे में मधुमक्खियां नई रानी पैदा नहीं करतीं। लेकिन जब रानी बूढ़ी हो जाती है और ज्यादा अंडे नहीं दे पाती, नई रानी के लिये तैयारी की जाती है। कुछ लारवा (सुडियों) या बच्चों को एक विशेष नरम पदार्थ खिलाया जाता है जो मक्खियां अपनी शरीर से निकालती हैं। इसे रायल यानी राजसी जैली कहा जाता है। इसमें बहुत से प्रोटीन व विटामिन होते हैं।

उससे दो तीन रानियां पैदा हो जाती हैं। फिर उनमें अपना सिक्का जमाने के लिये लड़ाई होती है जिसमें एक को छोड़ सब मारी जाती है। एक ही छत्ते में दो रानियां आमतौर पर नहीं रहतीं। दोनों में से बड़ी उम्र वाली अपने साथ आधी आबादी को लेकर उड़ जाती हैं, नया छत्ता बनाने के लिये।

शहद कैसे बनता है

मधुमक्खियां फूलों का रस अपने शरीर की शहद थैलियों में इकट्ठा करके छत्ते पर ले आती हैं । उनके शरीर में ही रस शहद में बदलना शुरू हो जाता है । छत्ते में आकर वे इन थैलियों को खाली कर लेती हैं । इसमें कई प्रोटीन उनका शरीर जोड़ता है, और इसे गाढ़ा करता है । इसके बाद इसे छत्ते के कोष्ठों में भर दिया जाता है । वहां पर भी मधुमक्खियां अपने परों से हवा कर कर के इसे सुखाती और गाढ़ा करती रहती हैं । जब उन्हें लगता है कि शहद अब पक गया है और खराब नहीं होगा, इन शहद भरे कोष्ठों को मोम से सीलबंद कर दिया जाता है ।

एयर कंडीशन की व्यवस्था

मजेदार बात यह है कि मधुमक्खियां अपने छत्ते को लगातार एक ही तापमान पर 34 से 35 सेंटीग्रेट तक रखती हैं। अगर यह ज्यादा गर्म हो जाता है तो वे परों से हवा करना तेज कर देती हैं। छत्ते में जमा किया पानी इससे उड़ता रहता है और छत्ते को ठंडा करता है। अगर तब भी गर्मी ज्यादा हो तो वे उड़ के बाहर चली जाती हैं और बाहर इकट्ठी हो जाती हैं। अगर ठंड ज्यादा बढ़ जाए तो वे पास पास इकट्ठी होकर अपने शरीर के ताप से छत्ते को गर्म करती हैं।

दादा जी

नवीन सागर

दादा जी नाराज हैं।
रोज रहा करते हैं वे क्या आज हैं!
पता नहीं चल पाता है कि वे किससे नाराज हैं
बच्चों से नाराज हैं कि बूढ़ों से नाराज हैं
चतुरों से नाराज हैं कि मूढ़ों से नाराज हैं
कचरों से नाराज हैं कि कूड़ों से नाराज हैं
चोटी से नाराज हैं कि जूड़ों से नाराज हैं
दादा जी नाराज हैं।
रोज रहा करते हैं वे क्या आज हैं!

दादा जी नाराज नहीं।
उन्हें हुआ है क्या कोई राज नहीं।
गुमसुम हैं अपने कमरे में
उन्हें बुलाये जो ऐसी आवाज नहीं।
गुजर गये उनकी दुनिया के मेले ठेले
दादी नहीं रहीं तब से हैं और अकेले।
कहां चले ऐ बच्चों उनको साथ लो
अपनी नरम हथेली में अब उनका हाथ लो
ले जाओ उन बागीचों के फूलों में
अपने साथ झुलाओ उनको झूलों में
फिर देखो लड्डू की चोरी करने में
साथ तुम्हारे वे भी फंस सकते हैं
हंसते हो जिस तरह
उस तरह वे अब भी हंस सकते हैं।
चूको मत वे कल न रहेंगे आज हैं
भूल जाओ कि दादा जी नाराज हैं।

–कैरेन हेडॉक

नीचे दिए गए चित्र में सभी औरतों की साड़ियां डिज़ाइन वाली हैं। केवल एक औरत ने बिल्कुल सादी साड़ी पहनी हुई है। क्या तुम उसकी साड़ी पर बाकी सबसे ज्यादा सुन्दर डिज़ाइन बना सकते हो ?

इस औरत ने अपने सिर पर
क्या क्या उठा रखा है ?
चित्र खींच कर बनाओ।

ककड़ियां

–निकोलाई नोसोव

एक बार पावलिक कोतका को मछली पकड़ने ले गया।

लेकिन उस दिन उनकी किस्मत अच्छी न थी। एक भी मछली हाथ न लगी और वे वापस घर की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्हें गांववालों का सब्जियों का सांझा खेत दिखाई दिया। वे दोनों बाड़ फांद कर खेत में जा पहुंचे। वहां उन्होंने ककड़ियां तोड़–तोड़कर जेबों में भर ली। तभी अचानक खेत के चौकीदार ने उन्हें देख लिया। उसने सीटी बजाई और उन्हें रोकना चाहा। लेकिन तब तक वे दोनों वहां से नौ दो ग्यारह हो गये। पावलिक डर गया कि कहीं यूं ककड़ियां तोड़ने की वजह से वह किसी मुसीबत में न फंस जाये। उसने झटपट उसकी सारी ककड़ियां कोतका को दे दी।

कोतका खुशी से छौड़ता हुआ उसके घर पहुंचा। ''मां, मां देखो तो, मैं तुम्हारे लिए कितनी ककड़ियां लाया हूं।''

''कहां से लाये तुम इन्हें?'' मां ने डपटकर पूछा।

''स... सब्जियों के खेत से।''

''कौन से सब्जियों के खेत से?''

''नदी किनारे वाले सब्जियों के खेत से।''

''तुम्हें इन्हें वहां से तोड़ने के लिये किसने कहा था?''

''किसी ने नहीं, मैं अपने आप ही तोड़ लाया।''

''ओह, तो तुम्हारा मतलब है तुम इन्हें चुराकर लाये हो?''

''मैंने इन्हें चुराया नहीं है, बस तोड़ लीं।'' कोतका जल्दी जल्दी जेबों से ककड़ियां निक. ालने लगा।

''एक मिनट रुको,'' मां ने कड़कती आवाज में कहा,

''अभी अपनी जेबें खाली न करो।''

''लेकिन क्यों?''

''क्योंकि तुम इन्हें अभी की अभी वापस कर आओगे।''

''ओह, लेकिन मैं अब इन्हें वापस नहीं कर सकता। इन्हें तो मैं एक क्यारी से तोड़कर लाया हूं, अब ये दोबारा नहीं उग सकतीं।''

''कोई बात नहीं, तुम इन्हें जहां से उठाकर लाये हो वहीं वापस रख आओ।''

''मैं इन्हें कहीं फेंक देता हूं।''

''नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुमने इन्हें नहीं उगाया है न ही तुमने इनकी

देखभाल की है तो तुम्हें इन्हें फेंकने का भी कोई अधिकार नहीं है।''

कोतका अब रोने लगा। ''वहां एक बूढ़ा चौकीदार भी था, उसने हमें देखकर सीटी बजाई थी, लेकिन हम वहां से भाग निकले।'' कोतका ने सुबकते हुये कहा।

''देखा, तुम कितने शरारती हो गये हो, यदि वह तुम्हें पकड़ लेता तो?''

''वह हमें कैसे पकड़ता, वह तो बूढ़ा है।''

''तुम्हें शर्म आनी चाहिये,'' उसकी मां ने कहा। ''वह बूढ़ा आदमी ककड़ियों की रखवाली कर रहा होगा। जब गांववालों को पता चलेगा कि खेत की सारी ककड़ियां गायब हैं तो वे सब उस बूढ़े को दोष देंगे। क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा?''

मां ने सारी ककड़ियां कोतका की जेबों में ठूंस दी। अब तो कोतका और जोर-जोर से रोने लगा-''मैं नहीं जा सकता वहां, उसके पास तो एक बंदूक भी है, वह मुझे गोली मार देगा।''

''तुम्हारे लिये यही सजा ठीक रहेगी। मुझे चोरी करने वाला बेटा नहीं चाहिये।''

कोतका लगातार रोये जा रहा था- ''मां, तुम भी चलो न मेरे साथ? मुझे अंधेरे से डर लगता है।''

''ककड़ियां चुराते समय तुम्हें डर नहीं लगा था, है ना?'' मां ने दो बड़ी-बड़ी ककड़ियां जो कोतका की कमीज की जेबों में नहीं आ रही थी, कोतका के हाथ में थमाई और उसे बाहर ले गई।''यदि तुम इन ककड़ियों को वापस जगह पर नहीं रख पाये तो घर मत आना।'' यह कहकर उन्होंने दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया।

कोतका धीरे-धीरे घर के आंगन से निकलकर सड़क की ओर चल पड़ा। बाहर काफी अंधेरा था।

''मैं इन्हें किसी गड्ढे में फेंक आऊंगा और मां से कह दूंगा कि मैं इन्हें वापस खेत में रख आया।''
कोतका ने मन ही मन सोचा।

''नहीं, नहीं किसी ने देख लिया तो?'' उसने तुरन्त विचार बदल दिया।

''और फिर वह बेचारा बूढ़ा आदमी भी तो मुसीबत में फंस सकता है।''

कोतका रोते रोते सड़क पर चला जा रहा था। रो भी रहा था और सोच भी रहा था। उसे डर भी लग रहा था, बाहर घना अंधेरा जो था।

''पावलिक बड़ा होशियार निकला।'' ''उसे सारी ककड़ियां तो मुझे दीं और खुद आराम से घर बैठा होगा। उसे किस बात का डर है?''
सोचते-सोचते कोतका गांव के बाहर निकल आया। उसने खेत की राह पकड़ी। रास्ते में घुप्प अंधेरा था और चारों ओर सन्नाटा था। वह इतना घबरा गया कि बाकी रास्ता उसने दौड़कर ही पार किया। जब वह
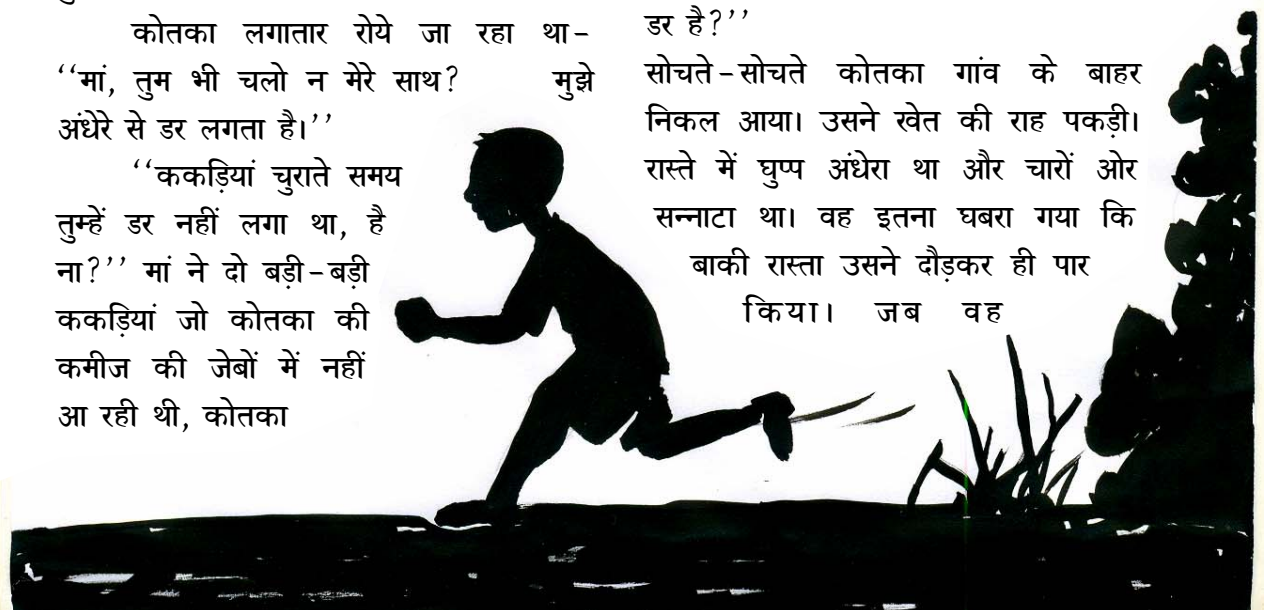
चौकीदार की झोंपड़ी के पास पहुंचा, वह जोर-जोर से रोने लगा। रोने की आवाज सुनकर बूढ़ा चौकीदार बाहर आ गया।

''तुम क्यों रो रहे हो मेरे बच्चे?''

''मैं ककड़ियां वापस करने आया हूं, बाबा।''

''कौन सी ककड़ियां?''

''वही जो आज दोपहर को मैंने और पावलिक ने उठाई थीं। मां ने इन्हें वापस रख आने को कहा है।''

''ओह, तो तुम वही हो जिन्हें मैंने दोपहर में देखा था। तो तुमने ककड़ियां तोड़ ही ली, नन्हें शैतान।''

''पावलिक ने भी तो मैंने भी । उसने अपनी ककड़ियां भी मुझे दे दी थीं।''

''पावलिक की छोड़ो, तुम्हे तो समझना चाहिये कि खेतों से ऐसे सब्जियां नहीं चुरानी चाहिये। अब आगे से ऐसा कभी मत करना। लाओ, मुझे जल्दी से ककड़ियां दो और घर भागो।''

कोतका ने अपनी जेबों से ककड़ियां निकाल निकाल कर जमीन पर रख दी।

''क्या इतनी ही हैं?'' बूढ़े आदमी ने पूछा।

''नहीं सारी नहीं है, एक कम है।'' इतना कहकर कोतका ने फिर रोना शुरू किया।

''अब क्या हुआ?''

''एक मैंने खा ली, बाबा। मुझे नहीं खानी चाहिये थी।''

''तुमने खा ली एक ककड़ी तो कोई बात नहीं, शौक से खा सकते हो।''

''लेकिन मेरी वजह से आप किसी मुसीबत में तो नहीं फंस जायेंगे न, बाबा?''

''तो तुम्हें इस बात की फिक्र है।''

बूढ़ा हंस दिया। ''नहीं, एक ककड़ी की वजह से मुझे कोई परेशानी न होगी। यदि तुम बाकी ककड़ियां न लाते तो शायद मैं किसी मुसीबत में फंस जाता।''

कोतका ने बूढ़े चौकीदार को अलविदा कहा और घर की ओर भागा। अचानक वह दौड़ते-दौड़ते रुक गया। उसने मुड़कर चिल्लाकर पूछा, ''बाबा, सब यह तो नहीं कहेंगे न कि मैंने एक ककड़ी चुरा कर खाई थी?''

''देखो भाई यह तो मैं नहीं जानता कि सब लोग क्या कहेंगे। चलो, हम मान लेते हैं कि तुमने ककड़ी नहीं चुराई। खुश?''

''लेकिन................''

''या यूं कि मैंने तुम्हें एक ककड़ी भेंट में दी थी?''

''धन्यवाद, बाबा, शुभ रात्रि।''

''शुभ रात्रि, मेरे बच्चे।''

कोतका सारी ताकत लगाकर खेतों को पार करता हुआ घर की ओर भागा। कभी गड्ढों पर छलांग लगाता तो कभी पुल को कूद फांदकर पार करता। जैसे ही वह गांव में पहुंचा, उसने दौड़ना बन्द कर दिया। अब वह चलकर बड़े आराम से जा रहा था। अब वह खुश था।

अनुवाद : कल्याणी मदान
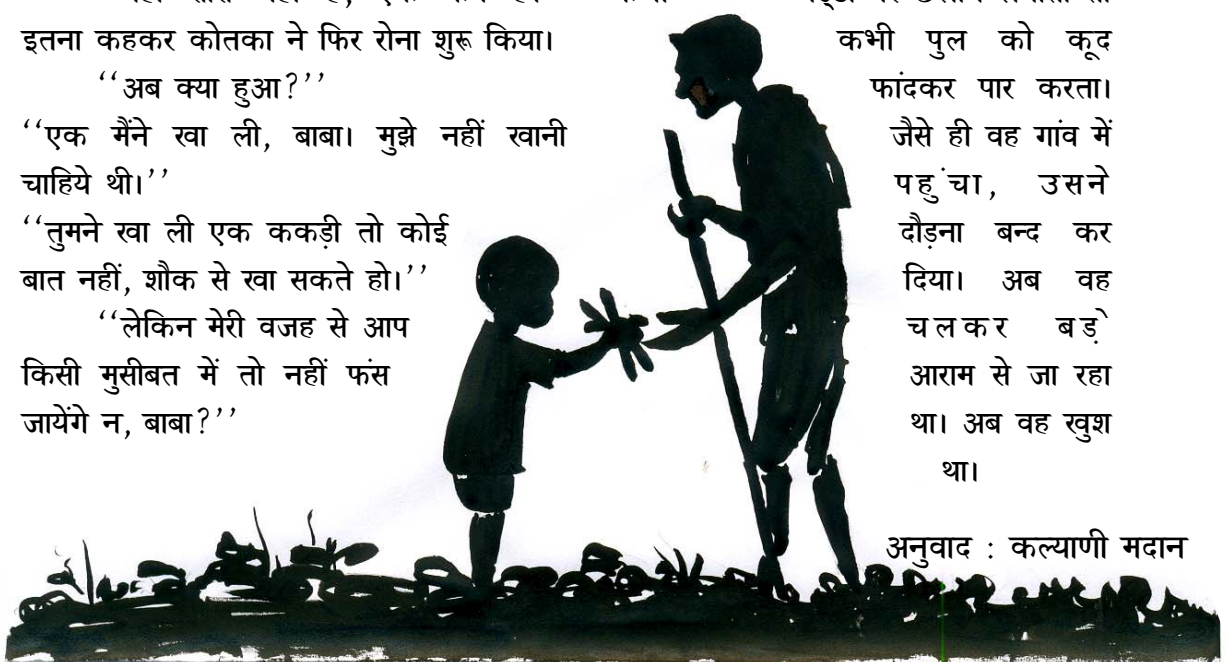
फूल बनाओ
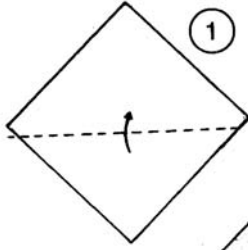
1) कागज को बीच में से मोड़ो।
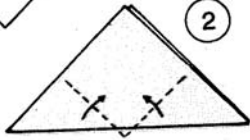
2) अब दिखाई गई रेखाओं पर फिर मोड़ो।
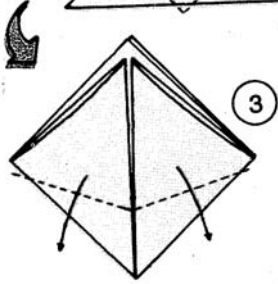
3) टूटी हुई रेखाओं पर नीचे की ओर मोड़ो।
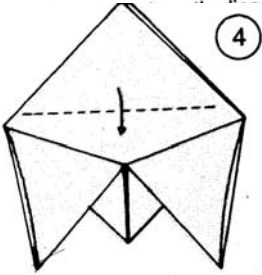
4) ऊपर वाले कागज को टूटी रेखा पर नीचे की ओर मोड़ो।
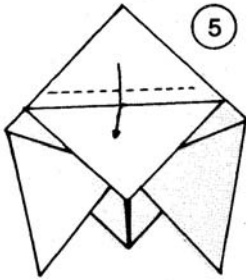
5) पीछे वाले कागज को भी थोड़ा उपर से सामने, नीचे की ओर मोड़ो।
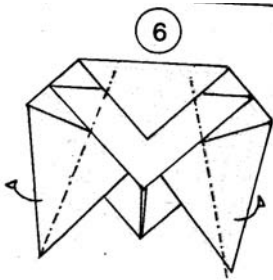
6) किनारों को चित्र में दिखाई रेखा पर पीछे मोड़ दो।

7) तुम्हारा फूल तैयार है। इसमें डंडी और पत्ते लगा दो।
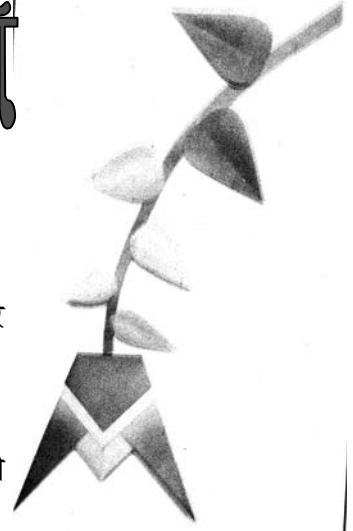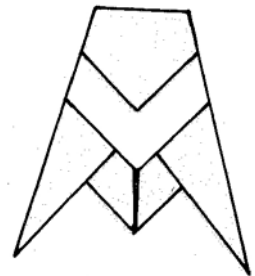
''बॉस, बड़ी दर्दनाक खबर टैलीप्रिंटर पर आई है।'' रिपोर्टर ने सम्पादक से कहा।
''क्या ?''
''अमेरिका के किट्ज़ लकोमचाल्को शहर में भयंकर भूकम्प आया है.........................''
''जल्दी पता करो कि भूकम्प से पहले इस शहर का क्या नाम था।''

दो आदमी एक ढाबे में बैठे थे। पहले ने दूसरे से कहा- 'मैं अपनी दाई आंख को अपने दांतों से काट सकता हूं।'
दूसरा बोला- हो ही नहीं सकता।
इस पर पहले ने कहा- 'मैं 500 रूपये की शर्त लगा सकता हूं।'
दूसरा मान गया। पहले आदमी ने अपनी कंचे जैसे दाई नकली आंख बाहर निकाली और उसे दांत से काट कर बता दिया। दूसरे आदमी को 500 रुपये देने पड़े।
अब पहले ने कहा- 'मैं तुम्हें अब एक मौका देता हूं जिससे तुम अपने पैसे वापस जीत सको। मैं अब 500 रुपये की शर्त लगाने को तैयार हूं कि मैं अपनी बाई आंख को भी दांत से काट सकता हूं।'
दूसरे ने सोचा- इसकी दोनों आंखें तो नकली हो नहीं सकती, इसलिए वह शर्त के लिए मान गया। पहले वाले ने चट से अपनी नकली दांत बाहर निकाले और उनसे अपनी बांई आंख को काट कर दिखा दिया। दूसरे को 500 रुपये और देने पड़े।

खाने के मुकाबिले में एक साहब ने छः किलो लड्डू, पच्चीस चपातियां और चार किलो सब्जी खाकर शर्त जीत ली। सब उनकी तारीफ करने लगे, लेकिन वह कुछ उदास हो गए। लोगों ने पूछा, ''उदास क्यों हों?''
तो बोले, ''अगर मेरी बीबी को पता चल गया कि मैंने खाना खा लिया है तो वह मेरे हिस्से का खाना नहीं पकाएगी।''

एक आदमी ने चूहों से परेशान होकर चूहेदान खरीदा।
रात को सोते समय उसे याद आया कि चूहेदान के लिये रोटी का टुकड़ा बचाना तो भूल गया। उसने अखबारी विज्ञापन से रोटी की तस्वीर काटकर चूहेदान में

डाल दी और सो गया। उसकी तरकीब काम कर गई। सवेरे चूहेदान में एक चूहे की तसवीर फंसी हुई मिली।

😊 😊 😊

भरे हुए रेस्त्रां में एक आदमी लौटकर घुसा और चिल्लाया, ''मेरा बटुआ खो गया है। उसमें एक हजार से ऊपर रुपए थे। जो उसे पाकर मुझे लौटायगा मेरे से दो सौ रुपए का इनाम पायगा।

फक्कड़ भी चाय पी रहा था। वह उठा और बोला, ''जो उसे पाकर मुझे लौटायगा मेरे से चार सौ रुपए का इनाम पाएगा।''

😊 😊 😊

डॉक्टर-मुझे ध्यान आ रहा है, मैंने तुम्हारी शक्ल किसी अन्य जगह भी देखी है।

परिचित-डॉक्टर साहब, आप गलती पर हैं। वह तो हमेशा से इसी कन्धे पर है।

😊 😊 😊

''---तो मेहरबान, कदरदान, जरा गौर फरमाइये! मेरे गुरु श्री श्री एक हजार आठ अखिलानन्द कुमार स्वामी को आप लोग जानते होंगे। हजारों साल उन्होंने हिमालय पर तपस्या करके यह बूटी ईजाद की है। जनाब, अगर बताये तरीके से इसका सेवन करेंगे तो चार पांच सौ साल आसानी से जी सकेंगे। मुझे देखिये, साढ़े तीन सौ साल की उम्र है, मेरी, मगर--''

भीड़ में से एक आदमी ने पास खड़े मदारी के जमूरे से पूछा, ''क्यों, यह तुम्हारा गुरु ठीक कह रहा है? साढ़े तीन सौ साल का है यह?''

''कह नहीं सकता!'' जमूरे ने गम्भीरता से कहा, ''मैं तो सिर्फ ढाई सौ साल से इनके साथ हूं।''

😊 😊 😊

मां-'तुम जब भी कोई गलती करते हो, मारे चिन्ता के मेरा एक बाल सफेद हो जाता है, लेकिन तुम हो कि गलती करने से बाज नहीं आते।'

पुत्र-''ओह! तब तो तुमने बहुत गल्तियां की होंगी; तभी तो नानी के सारे बाल सफेद हो गये हैं।''

😊 😊 😊

''यार, मुझे पांच रुपये उधार दे दो,'' राजेश ने अपने मित्र से कहा।

''उधार मित्रता में बिगाड़ कर देता है,'' मित्र का उत्तर था। ''और हमारी मित्रता पांच रुपये से कहीं अधिक की है।''

''अच्छा, तो पचास दे दो।''

गोलू के कारनामे

-रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट से साभार

अरे, तुम घड़ी घड़ी अपना रंग क्यों बदल देते हो ?
देखते नहीं ? इससे मैं अपने आस पास के वातावरण में छिप कर अपने शत्रु कौवे से बच जाता हूं।
रंग भरो
rajeevnt@hotmail.com
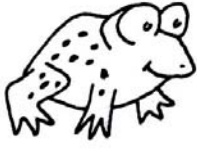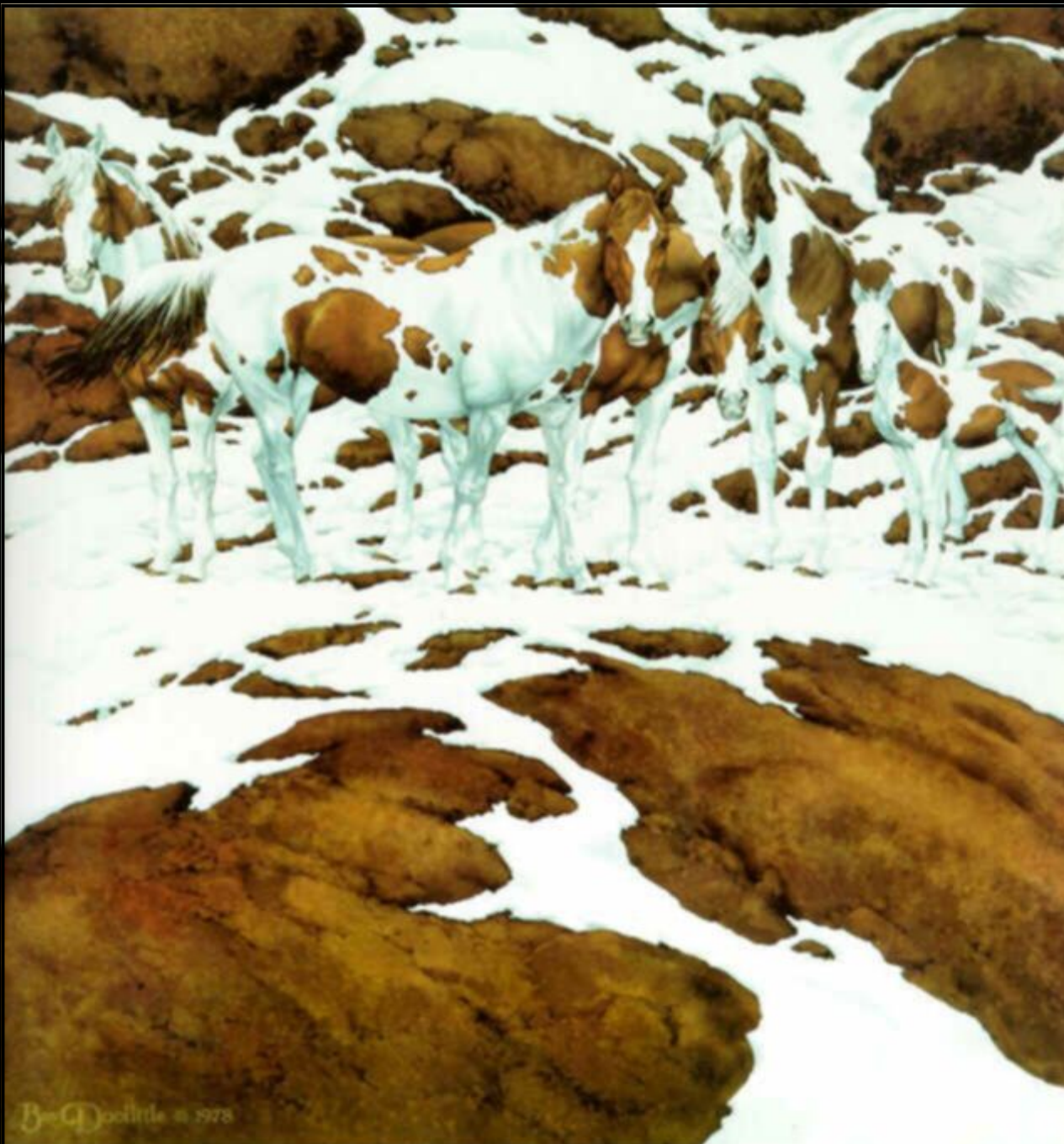
तुम ऊपर दिए गए चित्र में कितने घोड़े तलाश कर सकते हो?